॥ श्री ॥

खरतरगच्छीय श्रावकस्य

॥ पंचप्रतिक्रमणसूत्र ॥

विधिसंयुक्त.

यह पुस्तककी द्वितीयावृत्तिकों सवाइ
जयपुर जैनपाठशालाकी तरफसें.
भूरामल बेरावीनें.
श्रावक भीमसिंह माणककी मारफत.

निर्णयसागर मुद्रालयमें मुद्रित कराइ हैं.

संवत् १९५१. सन १८९६

प्रस्तावना.

प्रथम यह पुस्तक छप कर प्रसिद्ध करनेका हेतु कहे है, की सकलगुणगरिष्ठ, विद्वज्ञानवरिष्ठ, चारित्र पात्र चूडामणि, षट्काय रक्षक इत्यादि अनेक सद्गुणो करकें विराजमान न्यायांभोनिधि श्री श्री श्री श्री १००८ महामुनिश्री 'शिवजी रामजी' महाराज, ग्रामानुग्राम विहार करते करते, भव्यजीवोंकों प्रतिबोध देते देते 'सवाइ जयपुर'में पधारे, तब समस्त श्रीसंघ मिलकें बडे महोत्सवसें सब जिनचैत्योंका दर्शन करवाये. पीछें श्रीगुरुजी महाराज धर्मशालामें आ कर विराजमान हूवा, तब श्रीगुरुजी महाराजने सब श्री संघकों धर्मोपदेश देना सरु कीया, जिसमें ज्ञानका माहात्म्य वर्णन करते करते गुरुजीने ऐसा कहा कि इस कालमें ज्ञानाभ्यास करनेवालोंकी संख्या बहोत करकें स्वल्प हो गइ है, जिस्सें जगें जगें बडे बडे सहेरोमें पाठशाला बन जावे, तो क्रमसें पढनेवाले भी बहोत होजावे, क्योंकि कारणसें कार्य होता है.

ऐसा श्रीगुरु महाराजका उपदेश श्रवण करकें

सब श्रावकों आपसमें विचार करकें उसी वखत श्री गुरु महाराजजीकों कहने लगे कि महाज ! आपकी आज्ञासें 'सवाइ जयपुरमें' जैनपाठशाला स्थापन करनेका हमने निश्चय करा. पीछें विक्रमार्क संवत् १९४५ के आषाढ शुक्ल डुजके दिन पाठशाला स्थापन करकें तिस्में विद्याभ्यासीयोंकों विद्याभ्यासार्थ संस्कृत भाषा जाननेवाला दो पंडितोंको वर्षासन देकें रखे.

पीछें विद्याभ्यासी जनोंको जैनमार्गमें सामायिकादिक षट् आवश्यक अवश्य कर्त्तव्य है, सो पहिलेही पढना चहियें, इस वास्ते तिस ग्रंथको छपवानेका श्रीसंघने मुकरर कीया. तिसमें एक हजार पुस्तकका खरच तो शेठ माणकचंदजी मिलापचंदजी मेहतानें दीया, और जास्ती पुस्तक छपानेका खरच पंचाती तरफसें दीया जायगा एसा निश्चय करकें सब पंचातियों मिलकें श्रीमुंबइमें (मेरे पर) शेठ छगनलालजी मगन लालजीके पुत्र नूरामल्ल वेराठीके पर उक्त पुस्तककों मुंबइमें छपानेका हुकुम लिखा. तो तिस मुजब मैनें गोपालचंदजी यतिके पास यथा योग्य संशोधन करायकें श्रावक भीमसिंह माणककी मारफत छपवाया.

अव ये ठपी हुइ पुस्तककी प्रथमावृत्तिकी न
कल सव खप जानेसें फिर इनकी द्वितीयावृत्तिकी
नकल (२०००) दो हजार, हालमें यथामति सं
शोधन करकें मेनें श्रावक भीमसिंहमाणककी मार
फत ठपवाइ हे. ये पुस्तककी दो हजार नकलमेंसें
(१५००) पनरेसें नकलका खर्च मेहेंता माणेकचं
द मिलापचंदने दिया हे. तथा (५००) पांचसें न
कलका खर्च नवानगरवाले लोढा जालमचंदने दी
या हे. ओर ये पुस्तककी द्वितीयावृत्तिमें प्रथमावृत्ति
सें अधिक एक सूतकविचार, दूसरो असद्याइवि
चार, ओर तीसरो साधु, श्रावककों कोनसी वस्तु
कितने प्रहर तथा दिन पीछें खाने लायक न रहे ?
ये सव दाखल किये हे.

विज्ञप्ति.

वर्त्तमान समयमें श्रीजिनधर्मके केइ तरेकी पुस्तकों
ठपी हे, परंतु तिनमें श्रावककों अवश्य करणे योग्य
जो सामायिकसें ले कर पंचप्रतिक्रमण अरु पोषधा
दिक क्रिया हे तिसको जहां जेसा सूत्रपाठ चहियें
वैसाही सूत्रपाठ लिखकें अरु जिस जगें जो जो वि

धि लिखना चहियें,जहां जेही विधि लिखकें बराबर क्रमपूर्वक छपी होवे, एसी कोइ पुस्तक नहीं है.

इस वास्ते मेंने यह पुस्तक छपानेके प्रारंभसेंजक्त विचार पूर्वक सामायिकसें ले कर पौषधादि क्रियापर्यंत सर्व सूत्रोंको विधि संयुक्त विस्तार, प्रयास पूर्वक अनुक्रमसें छपकें पीछें सब श्रावक भाइयोंको निरंतर पठन पाठन करने योग्य ऐसे बहुत स्तवन, सज्झाय, स्तुतियो, चैत्यवंदनो, राग रागणीमें गानेकें प्रभातिपद तथा दादाजीके स्तवन वगेरे छपे हे.

यह पुस्तककों मेरी मति अनुसार शोधन करनेमें दृष्टि दोषसें, अरु स्थूलबुद्धिके होनेसें जो कुछ मेरी तरफसें ह्रस्व, दीर्घ, काना मात्रादिकका फरक रहा गया होवे, और कोइ अक्षर अधिक न्यून हुवा होवे, आगें पीछें हूवा होवे, सो सब पढने पढानेवाले सुज्ञजनोने मुझकों बालककी माफक ग्रंथ शोधनेका अभ्यासी जान कर मेरे पर बच्चेकी माफक प्रेम दर्शाय कर शोधकें वांचनां मेरी तरफसें जो भूल रही होवे तिसका मिछामि दुक्कड सर्व श्रीसंघ समक्ष देता हुं. ला० भुरामल्ल वेराठी.

यह पुस्तक सवाइ जयपुर जैन पाठशालामें मिलेगी.

॥ अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका प्रारंभः ॥

॥ ॐ परमेष्ठिने नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥

॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवद्याणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सवपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सवेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥१॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥१॥ पलावुं ॥२॥ अनुमोउं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥२॥कायगुप्ति ॥आदरुं॥३॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥इति॥२॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा होके तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकार भगवन् सुहराइ,सुहदेवसी, सुख तप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहो

होजी ? स्वामी शाता हेजी ? इति ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछें नीचें बेठ कें जिमणा हाथ नीचा कर कें अभ्युठिउमि कहे पीछें खमासमण दे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेह. पीछें इच्छं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीश बोल लिखते हैं ॥

॥ सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥१॥ स्नेहराग ॥२॥ दृष्टिराग ॥३॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥३॥

आदरुं ॥ कुगुरु ॥१॥ कुदेव ॥२॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥१॥ दर्शन ॥२॥ चारित्र ॥३॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण मावे हाथे करीयें॥

॥ ज्ञानविराधना ॥१॥ दर्शनविराधना ॥२॥ चारित्रविराधना ॥३॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

अब अंगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥१॥ नीललेश्या ॥२॥ कापोतलेश्या ॥३॥ ए तीनुं निलाडे मस्तकें परिहरुं॥

॥ ऋद्धिगारव॥१॥ रसगारव ॥२॥ शातागारव ॥ ३ ॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥१॥ नियाणाशल्य ॥२॥ मिछादंसणंशल्य ॥३॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय डावे खंने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन डावे हाथे परिहरुं ॥

॥ भय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥२॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन डावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥१॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पडिलेहणा संपूर्ण ॥ ५ ॥

॥ पीछें खडा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा०

॥ अथ अन्नछ उससिएणं ॥

॥ अन्नछ उससिएणं नीससिएणं खासिए एणं छीएणं जंन्नाइएणं उम्फुएणं वायनिसग्गेणं न्न मलिए पित्तमुछाए॥ १ ॥ सुढुमेहिं अंगसंचा लेहिं ॥ सुढुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुढुमेहिं दि ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अन्नग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं न्नगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं ज्का णेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥ इति ॥ ए॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्स ग्ग करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्स ग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिछयरे जि णे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली

॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संनव मनिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सी अल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अ रं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अनिथुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिठयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिला नं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु नि म्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वरगंनीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम. दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछें खमासमण देई इछाण॥ नगवन् बेसणो संदिस्साहुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इ

हं कहे कें वली खमासमण दे कर ॥ इच्छा० ॥ भगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इ हं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ सि ज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे कें वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ ग० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमा समण दे कें खडे हो कर आठ नवकार कह क र सझाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ पांगरणो सं दिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं केहह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥ भ० ॥ पां गरणो पडिग्घाउं ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीछें इछं कहीं वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सिझा य करेह. एसें कहे ॥इति प्राभातिक सामायिक ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमणदे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जंति ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ १ ॥ भरुअच्छेह मुणिसुव्वय, महुरिपास हुह दुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तिच्छयर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लप्भई ॥ नवकोडीहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडीहिं वरनाण ॥ समणह कोडी सहस्स दुइ,

थुणिज्जइ निच्च विहाण॥ १॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्का छप्पन्न अठ कोडीउ॥ चउसय गयासी या, तिलुक्के चेइए वंदे॥ २॥ वंदे नव कोडि स यं, पणवीसं कोडि लक्क तेवन्ना॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठासिया पडिमा॥३॥११॥

॥ अथ जंकिंचि॥

॥ जं किंचि नाम तिठं॥ सग्गे पायाले मा णुसे लोए॥ जाइं जिणबिंबाइं॥ ताइं सबाइं वंदामि॥ १॥ इति॥ १२॥

॥ अथ नमुठुणं वा शक्रस्तव॥

॥ नमुठुणं अरिहंताणं, नगवंताणं॥ १॥ आइगराणं, तिठगराणं, सयं संबुद्धाणं॥ २॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरी आणं, पुरिसवरगंधहठीणं॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लो गपज्जोअगराणं॥ ४॥ अनयदयाणं, चक्कुद याणं॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं

॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मना
यगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कव
ट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं,
विअट्ट उउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, ति
न्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मो
अगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव म
यल मरुअ मणंत मरकय मवाबाह मपुणराबि
त्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, न
मो जिणाणं, जिअ नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अई
आ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति णागए काले ॥
संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढे अ अहे अ तिरि
अ लोए अ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्र
संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ नगवन् जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय म

हाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्ला णआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मं तो ॥ तुझ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि एसुवि जीवा ॥ पावंति न डुक्क दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्नहि ए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठा णं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ जत्तिप्नरनि प्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ नवे नवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पनावउ नयवं ॥ नवनिवेउ मग्गा, णुसारि आ इठ फलसिध्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ ॥ गुरुजणपूआ परछकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोत व्वय, ण सेवणा आनव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥ ॥इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछें खमासमण दे कें इछा० ॥ न०॥ कुसुमिण डुसुमिण राई पायछित्त विसोहणठं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इछं कह कर कुसुमि ए डुसुमिण राई पायछित विसोहणठं करेमि काउस्सग्गं॥अन्नठ उससिएणं॥ इत्यादि पाठ क हे कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउ स्सग्ग करे॥पीछें णमो अरिहंताणं कह कर का उस्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र गट कहे. जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण

लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागरवरगं भीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदीयें ॥१॥ खमासमण देई श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहि कें वांदीयें ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वांदीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देई कें सर्व साधुजीकुं वांदीयें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणां ठावी गोमालीयें वैठ कें मस्तक नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहडे दे कर॥सबस्सविराइय ॥इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ दुच्चितिअ दुप्भासिय दुच्चिठिअ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं ॥

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥ ॥ पीछें नमुत्थुणं कह कें खडा होय कें ॥ करेमि भंते सामाइयं सावद्यं जोगं पच्चक्खामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामि ठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जोमे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ दुव्विचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ वारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मि

च्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ पीछैं तस्सुत्तरी०॥ अन्नछ उससिएणं कह क र चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा ए क लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणव त्तिआए ॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्का र वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ ह त्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ स परंतु मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ ीए ठामि काउस्सग्गं ॥२॥ इति ॥ २०॥ ॥ सव्वस्सवि ०कही चार नवकार अथवा एक चिठिअ इछाका उस्सग्ग करकें पार कें ज्ञानाचार

शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी०॥ सुयस्स नगवउंक रेमि काउस्सग्गं॥इत्यादि पाठ कहे,सोलिखते हैं

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ॥ नरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपम्हलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलज्ञ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे नो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सब्नूअ नावच्चिए॥ लोगो जछ पइठिउं जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं॥ धम्मो वढ्ढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढ्ढउ ॥४॥ इति ॥२१॥ सुअस्स नगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए०॥ ए पाठ पूर्ण कह

कर अन्नत्थूससिएणं कह कें आठ नवकार अ थवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करे. काउस्स ग्गके मांहे आज्ञुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आगें लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व ना रिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे, दिक्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठ नेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीछें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरें आवस्सग सूत्र वादणां निमित्तें मुहपत्ती पडिले हुं ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे: पीछें वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर ऊना हूआ आधा नीचा नम कर इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जा ए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इत ना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हूआ नि सीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें सं मासा प्रमार्जन कर कें उक्कड बेठ कें मावे हाथमें मुहपत्ति ले कें मावे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निल्लाड पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें ति सके मध्य भागमें गुरुचरणकी कल्पना क

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥

क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि डुक्कडं॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय॥ राजकथा,देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय. और जो कोइ पाप परनिंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन, वचन,कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामें आलोउं॥ तस्स मिछा मि डुक्कडं॥इति.आलो

यणं ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पीछें सव्वस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इछाका० ॥ भ० ॥ ए पद कहनेसें आलो या हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछें इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कह कें संभासा प्रमार्जन कर कें आसन पर वैठ कें जिमणा गोडा ऊंचा रख कें भावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तव गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इछं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते॥ भण कें इछामि पडिक्कमिउं जो मे राइउ इत्यादि कह कर॥ तं निंदे तं च गरिहामि पर्यंत वंदित्तु सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछें खडा हो कें अब्भुठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू

अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआर
स्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंस
णे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं
च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, साव
ज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे,
पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं,
चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसे
ण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगम
णे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अ
भिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख
विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्म
त्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे,
पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तट्ठाय पर
ट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणु
व्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खा
णं च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव
यंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ

मे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगर
ए जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि
गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे, अ
णवठाणे तहा सइ विहूणे ॥ सामाइअ वितह
कए, पढमे सिरकावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे
पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलरकेवे ॥ देसावगा
सियंमि, बीए सिरकावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा
रुच्चारविही, पमाय तह चेव जोयणाजोए ॥ पो
सह विहि विवरीए, तइए सिरकावए निंदे ॥
॥ २९ ॥ सच्चित्ते निरिकवणे, पिहिणे ववएस म
छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउठे सिरकावए
निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ डुहिए सुअ, जामे
असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तं
निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविजा
गो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु
अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह
लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउ

गे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मच हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिकमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंम्रेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिरिकउ विज्जो ॥ ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मूल विसार या ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस सम ज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स

एण एएण, सावउ जइवि वहुरउ होइ ॥ डुक्का
ण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥
॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, नयसंभरिआ
पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे
तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि
पन्नत्तस्स ॥ अब्भुठिउमि आरा, हणाए विरउ
मि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि
जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥
॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर सं
चिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए
॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे
दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिध्दा
साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मद्दिठी देवा, दिं
तु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिध्दाणं
करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दह
णे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव जीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती

मे सवनूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ४ए॥ एव म
हं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं स
म्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवी
सं ॥५०॥ इति ॥१ए॥ इहां प्रनातके पडिक्कमण
में देवसिके ठीकाने राइयं कहनां ॥

पीछें दो वादणां देकर अवग्रहमांहियकोज
कहे ॥इछाका०॥सं०॥न०॥अप्नुठिउमि अप्निंत
र ॥ राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संन्मा
सा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली वेठ के, वे वांह प
डिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षि
ण हाथ गुरु सामो करी॥ नीचो नम्यो थको जं
किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्नुठिउ ॥

॥इछाकारेण संदिस्सह नगवन् अप्नुठिउमि
अप्निंतर देवसिउं खामेउं॥इछं खामेमि देवसियं
जंकिंचि अप्पत्तियं ॥परप्पत्तियं नत्ते पाणे विणए
वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे॥ समासणे

अंतरभासाए उवरिभासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा॥तुम्हे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥इति॥

॥ इहां गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे. पीछें वे वांदणां देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय कें आयरिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहमीए कुल गणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सब्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावउ धम्मो निहिअ निअ चित्ते ॥ सव्वं खमा वइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि भंते इछामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप

चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थूण ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवी रकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नव कार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेहीवे वांदणांदेई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखेहैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंत राणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणि किरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्र तिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्खारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ चैत्रे

शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंद्रायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने

चोज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलाया कनकपुरव
रे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे द
शपुरनगरे नद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥
स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीर
तीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने नूरु
हाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल
विषमे डुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री
मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुरु
क्षे, चौजन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंमले मा
नुषांके ॥ इक्कूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके नवंति त्रिनुवन
वलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्तं श्रीजै
नचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, श्रो
द्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं नक्तिनाजस्त्रि
संध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जा
यते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदित

मनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्य वंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३९ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें॥ इच्छामो नि सट्ठियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछें णमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सिद्धा०॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं म हावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि,उ रन्तभावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिस त्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेह कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामल वारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल भरलोभालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवा

से हारनीहारहासे ॥ अविरलभविकारागारं विच्छित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥४॥ इति ॥३३॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली हरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमंजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला; झंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनि

वासे ॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहा राभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे. पीछैं खडा हो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नहू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही॥एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्रणमुं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा वारिपूरभ्कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रागमं परमसिो॥ पीछैं णमो अरिहंताणं कहलोभार्लाढर पारे॥ इस तरे आगें पण उ

णाणं ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सवलोए अरिहं त चेईआणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयट्ठइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखठाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० वंदण० अन्नत्थू०॥ कही॥एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजीस्तुति कहे,सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त॥ सांभलि सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं०॥ कह कें वेयावच्च गराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका का

उस्सग्ग करी पारि कें एामोऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें एामोत्थूएां० कहि कें ॥ तीन खमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्व्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा ॥ अढारसहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते स

वे ॥ सिरसा मणसा मच्छएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन वखत देई ॥ इच्छाकारेण सं दिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे. सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगं ति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवि त सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अं तर्गतजामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुध्द त्रिहुं काल में, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ ॥ जं किंचि ना म तित्थं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावं त केवि साहू० ॥ उंर णमोऽर्हत्सिध्धाचार्योपा ध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि कें सीमंधर जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

केवि साहूण॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनम्॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि०॥एह गिरिवरनो महिमा महोटी, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसस्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ध०॥२॥ दूर देशथी हूं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण विरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि भवि जन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ॥ ४ ॥ संवत अढारे त्र्यासी मास आषाढे, वदि

आठम जोमवारा ॥ प्रभुके चरण परतापसिंह में, क्षमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ध०॥८॥ इति ॥ ॥ पीछें जयवीयराय०॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा०॥ कहि कें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक ॥ शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पडिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ पडिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे. संदिस्साएह ॥ वीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ॥भ०॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे,करेह॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ इमहीज

दोइ खमासमणे अंग पडिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपडिलेहण करुं. कही के धोतियुं कणदोरो पडिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कही॥ थापनाचार्य पडिलेह रखे, अने जो गुरवादिक थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई॥इच्छा०॥सं०॥ भ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहेह॥ पीछें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पडिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥इच्छाका०॥सं०॥भ०॥ उहि पडिलेहण संदिस्साउं ॥ उही पडिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोभी दृष्टिपडिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबभी प्राये एही करते दिखते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हें ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ति पडिलेहे ॥ फिर खमासम ण देई ॥ इच्छा०॥सं०॥भ०॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति क ही वली खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥सं०॥ भ०॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्ध्द नमि भ न्नो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ भयवं दसण्णभद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ भयवं दसण्णभद्दो ॥

॥भयवं दसण्णभद्दो,सुदंसणो थूलिभद्द वयरो य ॥सफलीकयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥१ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संभ

रइ जीवो ॥ जं च न संजरामि अहं, मिछामि ज क्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय,मसुहं वा याइ नासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मि छामि जुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफ लो बोधवो,सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायि क विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वच नका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषण लगा होय, सो सहु मन कर, व चन कर, कायायें करी मिछामि जुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछें पडिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरि

जीकी सामाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामा
यिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिकविधि लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरें धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिले हण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्य जी आगें आवी नूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥न०॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह. इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥इच्छाका०॥ सं० ॥ न० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका०॥ सं०॥न०॥ सामायिक ठाउं? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार नवगन्! पसाउ करी सामायिक दंमक उच्चरावो जी ॥

गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइ यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्च री खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमे ह ॥ पीछें इछं कही ॥ इछामि पडिक्कमिउं ॥ इ रियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडि क्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मु खें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहप त्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इछाकार भग वन्! पसाउ करी पच्चरकाण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चरकाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वमेरा साधर्मी मुखें पच्चरके ॥ अने जो तिवि हार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चरकाण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो च

उविहार उपवास हुवे, तो पच्चरकाण करवुं वे नहीं ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ न०॥ सिन्नाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इछं कही वली खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥न०॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इछं कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पीछें खमासमण देई॥इछा० ॥सं० ॥न० ॥ वेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इछा०॥ सं० ॥न० ॥ वेसणुं ठाउं? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछें इछं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥इछा०॥ सं० ॥न० ॥ पांगरणुं पडिग्घाउं? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीछें इछं क

ही शुभ ध्यान करे॥ इति संध्यासामायिक विधिः॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा०॥ संण॥ भ०॥ चैत्यवंदन करुं? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं कही॥ जय तिहुयण कहे॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवछरीके रोज तीस गाथा कहेनी॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे है. अब जयतिहुअण लिखते हैं॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंभणय पुरठिअ॥१॥ तइ समरंत लहंति झत्तिवर पुत्त कलत्ताहिं, धम्म सुवन्न हिरम्म पुम्म जणभुंजहि रज्जहि॥ पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासप

साइए, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण
महजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुन्न कण्णनहु
ठ सुकुठिण, चक्खुक्खीणखएणखुन्न निरसल्लिअ
सूलिण॥तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पु
णण्णव, जय धन्नंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो
भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपय
त्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्जइ तुह
नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ
पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास
निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं वि
सुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गवि
गंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय
करि, दुरिअइं हरउ सुपासदेव दुरिअकरिके
सरि ॥५॥ तुह आणाथंभेइ भीमदप्पुद्धर सुरव
र, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर॥
जलथलचारिरउदखुद पसुजोइणि जोइअ, इय
तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ

॥६॥ पडिअ अठ अणठदिठत्तिपर निपर, रोमंचं चिअचारुकाय किंसरनरसुरवर ॥ जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु॥७॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंभ णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवसुअवसु सुसु वसिउ ठपसहि, मुक्खधम्मु कामछकाम नर नियनियसछहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणठ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइअ मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ए॥ भय विभल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर लिअ नयणविसमसुसुगग्गिरगिरकरुणय॥ तइं सहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महवि झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह

पवूढरूढ ड्डदाहसुपुलइय ॥ मणहिंमणूसजण
पुणअप्पाणं सुरनर,इय तिहुअण आणंदचंद ज
य पास जिणेसर ॥११॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट
टंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरं
गंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेहि
महूसव,इय तिहुअणं आणंदचंद जय पाससुहु
प्रव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु
रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयडसत्तविछरि
अ पहाभर ॥कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो
यणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुव
णत्तय दिणयर ॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि
त्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमडबोह कं
दलदलरेइणि ॥ जायइ फलभरभरिय हरिय डु
हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि
पास मइं मम ॥१४॥ कय अविकल कल्लाणव
ल्लिउल्लूरियडुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डु
ग्गइगम वारणुं॥जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणि

हावन्नाव करुणारससत्तम॥समविसमह किंघण
नए़इ न्नुविदाहुसमंतउ, इय उहवंधव पासनाह
मइ पाल घुणंतउ॥ ७४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
वि अस्रविकिविजुग्गय,जं जोइयउवयारुकरइउ
वयारसमुज्जय॥दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहि
णचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइ चं
गउ ॥७५॥ अहअस्रविजुग्गयविसेसकिविमस्र
हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह सम
ग्गह॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
सीयह, किं अस्रुंण तंचेव देव मामइअवहीरह
॥७६॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाण
उ किं पुण,हउं उक्खिउ निरुसत्तचत्तउक्कहु उस्सु
यमण॥ तं मस्रउ निमिसेण एण एउविज्जइ ल
ब्भइ, सच्चं जं न्नुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥
॥७७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइ अप्पप
यासिउ,किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपि
उ॥ अस्रु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिस्रदयास

ण, जइ अवगिणसि तुंहिजअहहकिंहोइसहया सउ॥२८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेच्छ पाइणवे लंविउ,तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअ उ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउंहावण, रखंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरण॥२ए॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अण लिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंनणयपुरछिअ, इय मुणिवरसिरि अजयदेव विणवइ आणिंदिअ ॥ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वे नाथस्तवनम् ॥

पीछें जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाना ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्त परम छजाणय, जय जय गुरु गिरिम गुरु ॥ जय उ हृत्त सत्ताण ताणय, थंनणयछिय पासजिण ॥

नवियह नीम नवहु, नव अवणंताणंतंगुण॥ तुऊत्ति संज नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खडा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नहू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहीएक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसी तरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीछैं लोगस्स कह कर सवलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें उक्त स्तुति की दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥कामित नर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ नवियणनें तारे, प्रवहण सम निशिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछैं पुक्खरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें एक नवकार का काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, नाख्या श्रीनगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥३॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्च

बैठ कें नगवन्! सूत्र नणुं एसा कहे. तव गुरु कहे नणेह. पीछें इछं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि नं ते नणीने इछामि पडिक्कमिउं जो मे देव सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछें खडा हो कर अप्नुठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खडा हुवा इछा० ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्नुठिउमि अप्नितर देवसियं खामेउं? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इछं खामेमि देवसियं कहि कें गोमाली यें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उवज्ञाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि नं ते सामाइयं इछामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउस्सग्गं अन्नहू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काउस्सग्ग करी पारि कें पींछें दर्शनशुद्धि नि
मित्तें प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत
चेइयाणं०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें
एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान
शुद्धि निमित्तें पुक्करवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स
जगवउ० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें
एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पींछें पारि
कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न
कहे. पींछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्न
त्थू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे.
पींछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ
स्सग्ग पारि कें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत
देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो, गुरु कहे. और
दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब
श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हें ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनो

ल्वा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछें खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्व ली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्र देवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीछें खडा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडू बैठ कें कहे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेहह.

पीछें मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वा

ण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुठदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पञ्चरकाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसठो पडिकमणां, वांदणां, काउस्सग्ग, पञ्चरकाण, ठ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उगो अधिको अक्षर ऊंचो नीचो कह्यो होय, ते सवें मन, वचन, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इछामो अणुसठिं०॥ कही बैठे. पीछें गुरु एक स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाणं॥ णमोऽर्हत्सिध्धा०॥ कही॥णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं कही संसार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः

क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोजतः ॥ स शुक्रमासोभववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥३॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृङ्गीकुरङ्गं, मुखश शिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्त्ति ॥ विकच कम लमुच्चैः साऽस्त्वाचिंत्यप्रभावा, सकलसुखवि धात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थूणं० कहि कें. एक श्रावक खमासमण दई कहेः–इच्छा का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं? दूसरा खमा समण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं०॥ भ० ॥ स्तवन भणुं स्तवन सांभलुं? गुरु कहे, भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धाण॥ कहि कें बडो स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ नविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम प
रम आधारो रे ॥ न०॥श्री० ॥ जिनप्रतिमा जि
न सारखीजाणो, न करो शंका कांई ॥ आगम
वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ न०
श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते
कहियें किम जाणे ॥ नूला तेह अज्ञानें नरि
या, नहिं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ न० ॥ श्री० ॥
॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्र
मुख अनेक ॥ विविधपरें जिन नगति करंता,
पाम्या धर्म विवेक रे ॥ न० ॥ श्री० ॥३॥ जिन
प्रतिमा बहु नगतें जोतां, होय निश्चय उपगा
र ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र
कुमार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥४॥ जिनप्रतिमा आ
कारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी
बहुला मत्स्यदिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ न०
॥ श्री० ॥५॥ पांचमा अंगें जिन प्रतिमानो, प्र

गटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥६॥ दशमे अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिन राज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करियें केम अकाज रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥७॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ भ०॥ श्री०॥ ॥ ए ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद सवाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अट्ठाइज़ेसु कहनां, फेर खमास मणे ॥ इहाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ देवसि पाय छित विशुध्दि निमित्तं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे, करेह. पीछें इच्छं कहि कें देवसि पायछित्त विशुध्दि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नहू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछें खमासमण दे कर इहाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ खुद्दोवद्दव उन्नावणहं करेमि काउस्स ग्गं ॥ अन्नहू० ॥ इत्यादि कही. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पा रि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्ञाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्ञाय करुं ? तीन नवकार गुणीजें. पीछें ख मासमण देई कें ॥ इहा० ॥ सं० ॥ नगवन् चै त्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंनणा पा

र्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये॥इति॥

॥ पीछें नमोहुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी ' सिरि थंभणयठिय पास सामिणो० ' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयठियपाससामिणो सेस तिछ सामीणं ॥ तिछ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणछं, काउस्सग्गं

करेमि सत्तीए॥ भत्तीए गुण सुठियस्स,संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं॥ पीछें खडे हो के वंदण व० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें,एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स कहि बेठ कें भावो गोमो उंचो करि कें खमास

मण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, डुज्जय मय ण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिध्उ, सोहइ फणम णि किरणालिध्उ ॥ नंनव जलहर तडिल्ल य लंछिय, सो जिणु पासु पयछउ वंछिय॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मु निवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्र तिदिनं कुर्वंतु वोमंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछैं नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि कें, पक्खी, चउम्मासी अरु संवछरीके रोज

तो वडी शांति सुणे, परंतु और दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ॐमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय श स्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वा मिकसंपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपा लनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ स र्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशम नाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीनां प्र मथनाय ॥५॥ यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्यो पयोगकृततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित,

मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु न
मस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भव
ति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्या
ण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसि
द्धे, निर्वृति निर्वाणजननि! सत्त्वानाम् ॥ अभय
प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ए॥
भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि! ॥
सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदाना
य ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिन
तानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति य
शो, वर्द्धिनि! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलि
लानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज रोगर
णभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वा
पदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,
कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं

कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं मे ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति नमो नमो ह्रौं, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्स रं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ स लिलादिजय विनाशी, शांत्यादिकरश्च जक्ति मताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति जावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं या यात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्न तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वर ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व ध र्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा वीजलीका चांदणा,

पडा होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थ० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कही पूर्वली परें सामायिक पारे. पीछें एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥१॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंडाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे॥

॥ अथ थुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः, श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥दर्शनाद्दुरितध्वंसी,वंदनाद्वांछितप्रदः॥ पूजनात्पूरकः श्रीणां, जिनःसाक्षात्सुरद्रुमः॥२॥ इति॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥३॥ इति आदिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिरनामी ॥ कंचन वरण शरीर कांति, अतिशय

अभिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरप ति कुलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अ खंडित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें को डि कल्याण ॥४॥ इति श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवं त ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सु खकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशि दिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥

श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रि भुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक पडिक्कमी॥१॥खमासमण देई देवसी आलोइयं पडिकंता ॥ इछा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुह पत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुहप

त्ती, संवछरीये संवछरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इछं कहे दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, व दणां देई, तिहां पखीमें पखो वइक्कंतो ॥ चउ मासी पडि० ॥ चउमासीउ वइक्कंतो संवछरी संवछरो वइक्कंतो. एम यथायोगें कहे ॥ प रु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पाखियवं चउमासिक सांवछरिक जणजो. ठींक जावंत करजो. मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासे सो वि वरा शुध्द खासजो. मांफलमें सावचेत रहेजो पीछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें ऊठी ॥ इ छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ संबुध्दा खामणेणं ॥ अ ब्भुठिउमि अप्भिंतर पक्खियं ॥ २ ॥ खामेऊं ! गुरु कहे, खामेह ॥ पीछें मस्तकें अंजलि करतो थको, इछं खामेमि पक्खियं ॥ २ ॥ कही, गोफा लीयें वेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें प

नरसह्नं दिवसाणं पनरसह्नं राईणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउह्नं मासाणं अठह्नं पख्काणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. ...च्छरीयें डुवालसह्नं मासाणं चउवीसह्नं प ॥णं तिन्निसयसठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि ण ॥ ...त्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिछा रण...क्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पाखियें तीन, चउमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ पीछें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इछा० ॥ सं०॥ च०॥ पक्किय्यं आलोवुं? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछें इछं आलोए मि, जो मे पक्किउ॥३॥ अइयारो कउ, इत्यादि सूत्र जणी॥ संक्षेपें अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तह य

विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥१॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुउ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिछा मि छुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अथ तदुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिझाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रें अधिको उंगे आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें

वीसाख्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांमी अणपडिलेही, वसती अणसोधी, अ सिवाई अणोका कालवेलामांहि दशवैकालि क प्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें नण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडी वहीदस्तरी ठली या कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लो गो थूंक लागो ऊसीसे मूक्यो कनें ठतां आहा र नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य नक्षण ऊपेक्षण की धो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो ऊवेख्यो, ठती शक्तें सार संन्नाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मत्र्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्र तें नणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अप घात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म नःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी अ सद्दहणा कीधी, कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वि तर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अ

ष्टविध ज्ञानाचार विषईउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिछा अ मूढदिठी अ॥ उववूह थिरीकरणे, वछल्ल पभाव णे अठ ॥१॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंक पणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं, सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मलमली न गात्र देखी छुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं

उवेखीउं, वती शक्ते सार संभाल न कीधी,सा
धर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी
चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश
आशातना कीधी, अधौतवस्त्रें देवपूजा कीधी,
तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूंपी कलश तं
णो ठबको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणा
रिय हाथथकी पडीउ, पडिलेहवो वीसार्यो,
नचकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईउ
जिको अतिचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिंसमिईहिं तिहिं
गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नाय
वो ॥१॥ इरियासमिती १, भासासमिती २, एष
णासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिखेवणासमि
ती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठा
वणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २,
कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें

पाली नहीं॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीधे अष्टविध चारित्राचार विषईउ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्में श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्रीसम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः— संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगी सु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशाय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या,

अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभळ्यां, शराध संवत्सरी होळी बळेव माहीपूनिम अजापडि वो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपां चम फूलणाछठ शीलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सवारस ध नतेरस अनंतचोदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर बाहिर कूई तलाव नदीसमुद्र कुंभमें पुण्य हेतु स्नान कीधां,दान दी धां,ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां,अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकित्साः—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो, जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधि देव गुणे शुद्ध भावें न पूज्या,न मान्या,महात्मा ना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुउ मिथ्यात्वी

तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मा
की, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसम
कितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवस
मांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुउ हो
य, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिछामि०॥ १॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच
अतिचार. वह बंध छविछेए, अइभारे भत्त
पाण वुछेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गा
ढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घ
णे भारें पीड्या, निर्लांछन कर्म कीधां. चारा
पाणी तणी वेला सार संभार न कीधी, लहिणे
देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखें आपण
जिम्या, अणगल पाणी वावस्युं, रूडे गल्युं
नही, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्यां
लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. सा
प कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिं
डा साहतां मूआं, दूखव्यां, रूडे थानक न मू

क्या, कीडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चू डेलीपतंगिया मेरूकां अलसिया ईली कूति मांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चि डकलानां ईंमां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जि के जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कीधी,संखारो सूकव्यो,सुल्या धान तावडे दीधां,दलाव्यां,नरडाव्यां, खाटला तावडे जाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी,दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहि ला प्राणातिपात व्रत विषइउं अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड

लेहे य ॥ सहसात्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो गे. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं जूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजी

व निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मान माप वहोख्यां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदी गांठ कीधी, किणहीनें लेखे प लेखे भुलव्युं, पडी वस्त उलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइ०॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिवअणुरागे ॥ अपरिग्रहीतागमन, इत्वर परिग्रहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांगा, घरघरणां कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या, काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाप कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्य द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं- पढी वीसारिउ, नियम वीसारिउ ॥ पांचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषइउ०॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी,विस्मृति लगें अधिक भूमि गया,पाठवणी आघी मोकली॥ छठे दिग्व्रत वि० ॥६॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे,

अपोल डुप्पोलयं च आहारे० सचित्त तणे नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं, तथा सचित्त मली वस्तु अपक्काहार डुपक्काहार तुछौपधि तणुं नक्षण कीधुं. होला डंबी पहुंक काकडी नडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख नक्षण कीधां ॥सचित्त दव्व विगई, पाणह तंबोल वछ कुसुमेसु॥ वाहण सयण विलेवण, बंन दिसि एहाण नत्ते सु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संनाख्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम नांग्या. बावीस अनक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आउं मूला गाजर पींमालू सूरण सेलरां काची आंबली गोलहां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसतुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पींचू पंपोटा पींपी विष हीम करहा घोलवडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां,

रात्रिभोजन कीधुं,लगवगतीवेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालि कम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्ये, लरक वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केशावाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. ईटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइउ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कंदर्प लगें विट

नी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणईने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारी कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोलनाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आएयां, झीलोले झीच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संनेडा लाया, भैंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि झूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, गस पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडी कंथुआ माखी उंदर गिं

काय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथा रा पोरसि तणी विधि नणउ वीसारिउ. पोरसि मांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधउं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसा रिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्या रमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अति चार ॥ सच्चित्ते निख्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आ पणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मछरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ

धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥
वारमे अतिथि संविभाग व्रतविपर्यो० ॥

॥संलेहणा तणा पांच अतिचार.इहलोए पर लोए०॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउ गे जीविआसंसप्पउगे मरणासंसप्पउगे कामभो गासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्र वर्त्ति पद वांछयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवा धिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववा तणी वां छ कीधी,दुःख आव्ये मरवातणी वांछ कीधी,का मभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदं ॥ छ अभ्यंतर, छ वा हिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्तें कीधुं नहीं. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नहीं, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीण

ता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोर
सी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमढ्ढ एका
सणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्का
ण पारवां वीसास्यां. बेसतां नवकार भण्यो न
ही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबि
ल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं,
वमन थयुं ॥ वाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप ॥ पायछितं विणउ० गुरु
कनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नहीं, गुरुदत्त
प्रायछित तप लेखा शुद्ध पुहचाड्युं नहीं, देव
गुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नही,
वाचना पृछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा
लक्षण पंचविध सिज्झाय कीधी नहीं, धर्म्मध्या
न शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त
लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अ
भ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहि

यवलविरीउ,परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइ अ जहा थामं, नायवो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं वल वीर्य गोपव्युं,रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, वेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु॥बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥१॥ पडिसिध्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिध्द वावीस अभक्ष्य वत्तीस अनंत काय बहुवीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां,नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां,जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं,आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,प्राणातिपात १,मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५,

क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ए, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, पर परिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो करा व्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मै श्री सम्यक्त्व मूल वारह व्रत चोवीसां सो अतिचा रमांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके वारह व्रतका अतिचार सं०

॥ पीछें सव्वस्सवि पक्खिय ॥ इत्यादि इछाकारे ण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउछे ण पडिक्कमह. चउमासे छठेण पडिक्कमह. संव छरीयें अठमेण पडिक्कमह. इछं तस्स मिछामि डुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इ छाकारेण संदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोइ

यं पडिकंता ॥१॥ पत्तेयखामणेणं, अप्नुठिओमि अप्निंतरपक्खियं ॥३॥ खामेउं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इछं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वें कह्यो, तिम कही मिछामि डुक्कडं देई खमावे, पीछें बे वांदणां देई. नगवन्! देवसियं आलोइयं पडिकंता पक्खियं ॥ ३ ॥ पडिक्कमा वह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पीछें इछं कही करेमि नंते सामाइयं ॥ इछामि ठामि काउस्स ग्गं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सु त्तरी० अन्नत्थ० ॥कही॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांनले. अने गुरुथकी जू दा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. नगवन्! सूत्र नणुं? गुरु कहे, नणेह. एसो वचन मनमें धारी ॥ इछं कही, उनो थ को, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखें देई. तीन नवका र कही, मधुरस्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदि त्तु सूत्र गुणे. वीजा श्रावक करेमि नं ते० इछा

मि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, उन्ना थका तीन नवकार गुणी वेसे. पीठें ॥३॥ नवकार ॥३॥ करेमि न्नं ते कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमे देवसियं सवं ॥ एहने ठिकाणें पडिक्कमे पक्खियं, चउम्मासियं, संवच्छरियं सवं कहे. पीठें ऊठी, अप्नुठिउमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण न्नणी, खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,काउस्सग्ग करूं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही, करेमि न्नंते सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवछरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लो

गस्स कहे. वेसी मुहपत्ती पडिलेही, वे वांदणां देई इञ्चा० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥ समाप्ति खामणे णं ॥ अब्भुट्ठिओमि अप्निंतर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेळं ? गुरु कहे खामेह. पीछें इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो. तिम कहे, पीछें इञ्चाका० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥ पाखी ॥ ३ ॥ खामणां खामूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह. पीछें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसट्ठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीनि लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंविल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा वे हजार सज्झाय करी, एक उपवास नी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें दैवसिक ऋ

णजो. एम चउमासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संवत्सरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछें जिणे तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न कीधो हुवे ते त हत्ति कहे ॥ पीछें वे वांदणां देई, अप्नुठिउमि अभ्भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीछें वे वांदणां देई. आयरिय उवप्नाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि देवसिक पडिकमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, पीछें भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें भवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥
निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वें वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक

मणो पूरो हुवां पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सि०ध्या० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्खिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चक्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरें पच्चक्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चक्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहित्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वस

माहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकार सी पच्चक्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्च क्खे. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चक्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुकार सहियं पच्चक्काइ ॥ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइ मं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकार सी पच्चक्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी सुंढसी पच्चक्कामि, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइ मं अन्न० ॥ सहसा० ॥ पच्छन्नकालेणं दिसा मोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव० विगइउ पच्चक्का मि. इत्यादि पूर्वकी परें कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चक्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चक्काण जा

एना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चरकाइके ठि ·काने इहां साढपोरसिं पच्चरकाइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥६॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढ्ढं अवढ्ढं वा पच्चरकाइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइ मं अण०॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥साहु॥ ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ विगइउ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढ्ढपच्चरकाण ॥३॥आ०॥७॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्ग ए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं बिआसणं वा पच्चरकाइ. डुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ ण० सह० सागारिआगारेणं आउटणपसा रेणं गुरुअभ्भुठाणेणं पारि० मह० सव्व० देसा वगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासणं बिआसण पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्ग
ए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अस० सह० पछ्छका० दिसा० साहु०
सव्व० एकासणं एगठाणं पच्चरकाइ. डुविहं ति
विहं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइ
मं अस० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्नु
ठाणेणं पारिठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्या
दि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण ॥
आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
सा० अस० सह० पछ० दिसामो० साहु० स
व्व० आयंबिलं पच्चरकाइ. असुठ० सह० ले
वालेवेणं गिहठसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पा
रिठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चरकाइ. तिवि
हंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस०
सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गु

रुअप्पुठाणेणं पारिठा० मह० सव्व० वोसिरइ ॥६॥ इति आंबिल पच्चक्काण ॥ आगार ॥८॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चक्काइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव० ॥ निविगइयं पच्चक्कामि. अण्ण० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारि० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्काइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्कामि. अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चक्काण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चक्कामि. चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्कामि. अण्ण० सह० म० सव्व० वोसिरा

मि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चरकाण ॥ ए॥

॥ सूरे उग्गए अप्नत्तठं पच्चरकामि. तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अस० स ह० पाणहार पोरसिं साढ्ढ पोरसिं पुरिमढ्ढ अ वढ्ढ वा पच्चरकाइ अस० सह० पछस० दिसा० साहु० सव्व देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्च रकामि. अ० स० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चरकाण ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं पुरिमढ्ढं अवढ्ढं वा प च्चरकामि. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं अस णं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्ति यं पच्चरकामि. तिविहं चउविहंपि आहारं अस णं पाणं खाइमं साइमं अस० सह० साग० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चरकामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चरकाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्काइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० मह० ॥ सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चक्काण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्कामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति दिवसचरिम डुविहार पच्चक्काण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्कामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चक्काण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पच्चक्काइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पच्चक्काण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठ

सहि प्रमुख अभिग्रह पच्चक्काणकेभी ए चार आगार. अस॰सह॰मह॰सव॰वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चक्काण ॥

॥ अहस्सं भंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्कामि दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उह वा अस्रह वा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चक्कामि भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि असेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पडिवज्जइ ता अभिग्गह अस्रहणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चक्काण ॥

॥ तथा साधु पच्चक्काण करे. तव देसावगासी नही पच्चक्खे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका

व आगार पच्चके सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चक्काण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरिमड्ढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आयंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयत्तठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री वृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल

नावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुव म महप्पनावे, थोसामि सुदिठ सप्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सब्ब डुक्ख प्पसंतीणं, सब पावप्पसंतिणं॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ अलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च नावउ, अनयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल नुयगवई पयय पणिवइअं ॥ अजि

अ महमविअ सुनय नय निउणमनयकरं, स रणमुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं सयय मुव णमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्त वित्थिन्न संथिअं थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्ज वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेड्ढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्क

हिओए महप्पभावो जो वाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई वत्तीसारायवर सहस्साणुआय मग्गो चउदस वर रयण नव महानिहि चउसहि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्ढउ ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव्व भया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इक्खाग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति

गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सवलोअ नावि अ प्पनावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणाइरे अ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणवइ, सार गुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥१७॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजण थुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउ, संतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिरि रइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबु

हाविव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं च हुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥१ए॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडिसयसंथुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अनयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयउ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो अरण रकुभिअ लुलिअ चल कुंमलं गय तिरीम सोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढउ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंमिअ सुट्ठु सुविम्हिअ सव्वलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणा

मा ॥ ७३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपयाहिणं ॥ पणमिऊ णय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ ७४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं,संति मुत्तम महातवं नमे ॥७५॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअ हंस वहुगामिणिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालिणिआहिं, सकल कमल दललोअणिआहिं ॥ ७६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभरवि णमिय गायलयाहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसणियाहिं ॥ ७७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग ति

लय पत्तलेह नामएहिं चिन्हएहिं संगयं गया हिं भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहं जि णचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेसं पयउ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवं दिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणय स्सा, भत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥ देव वर हरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआ हिं ॥ ३०॥ भासुरयं ॥ वंस सह तंति ताल मे लिए तिउक्खराभिराम सह मीसएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघं टिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिरा म सह मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलो अ सव सत्त संतिकारयं पसंत सव पाव दोस

मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥ ग्त्त चामर पडागजूत्र्य जव मंफ्त्रिा, फयवर मगर तुरय सिरिवत्र सुलंगणा ॥ दीव समुद्द मंदरदिसागयसोहिआ, सत्रिअ वसह सीहसिरिवत्रसुलंगणा ॥ ३२ ॥ ललित्र्यं ॥ सहावलठा समप्पइठा, अदोस डठा गुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा ॥३३॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअ सवपावया, सवलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्क सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नंदिसेणमभिनंदिं ॥

परिसाइवि सुदनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्किअ चाउम्मासिय, संवहरिए अवस्स नणिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो॥३८॥जो पढइ जोअ निसुणइ, उनउ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ॥ ३ए ॥ जइ इहह परम पयं, अहवा कित्तिं सुविहडां नुवणे ॥ ता तेलुक्कुरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृद्द जितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥१॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्क मनक्क निग्गयपहा दंमछलेणं गिणं, वंदारूण दिसंत इव पयडं निवाणम ग्गावलिं ॥ कुंदिंडुज्जल दंतकंति मिसउ नीहं त नाणंकुरु, केरे दोविड इक्क सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं, खय समय समीरं जो

जणिआ गईए ॥ सदल नदय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ मदव संतिं सो समत्तो च णेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहुमाणु ल्लासभत्तिझरे ण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अ लमहव अचिंता णंतसामत्थओसिं, फलइह लहु सवं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयलज यहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु डठो निठदोघठ्यठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जिणिंदे न्निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वहृए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फु रइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियप यपयारं भूरिदिव्वंगहारं, फुडगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज हंसणच्छे अभोया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती,

कणयरयपसंगा ठज्जए जाणिमुत्ती ॥ सम्मस
परिरंन्ना रंन्ननिवाणलठी, घणायणघुसि णि
क्कु प्पंकापिंगीकयव ॥ ७ ॥ वद्दुविद्दनयन्नंगं
वत्थणिच्चं अणिच्चं, सदसदणन्निलप्पा लप्पमेगं
अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,
वयण मवय णिज्जं ते जिणे संन्नरामि ॥ ८ ॥
पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, न्नमइज
य मसस्सं तावमिछत्तछस्सं ॥ फुरइ फुडफलंता
णंतणाणं सुपूरो, पयड मजिअसंती झाण सू
रो न जाव ॥ ए ॥ अरि करि हरि तिएहु एहंबु
चोरा हिवाही, समर डमर मारी रुद्द खुद्दो
वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजं
ती, निविडतरत मोहा न्नरकरालुंखिअ व ॥१०॥
निचिअडुरिअदारु दित्तझाणग्गिजाला, परि
गय मिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं ॥ कणय
निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मि

ह लहिं गाढसंथंमिअव ॥ ११ ॥ अडविनिव
डिआणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि
हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण
जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु
संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि
परिकिण्णं पक्क पाइक्कपुण्णं, सयलपुहवि रज्जं
छड्डिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पडिलग्गं जेजि
णामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पस
ण्णा ॥ १३ ॥ छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पला
हिं, थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्झोदरीहिं ॥
ललिअ भुअलयाहिं पीण सोणित्थणीहिं,
सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥
अरिस किडि भकुठ गंठि कासाइसार, खय
जर वण लूआ साससोसोदराणि ॥ नहमुह
दसणच्छी कुच्छिकण्णाइरोगे, मह जिणजुअ
पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरुडहता
से पक्किए चाउमासे, जिणवर ज्जगयुत्तं व

हरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिद्या एह झाएइ चित्ते, कुणइ मुणइ विग्घं जेण धाएइ सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणेसर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तित्थंकर सोलसम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हर सुदुरिअमखिलं पि थुणंतह ॥१७॥ इति श्रीलघुअजितशांति स्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किर णरंजिअं मुणिणो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेय वुड्ढि य च्छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता पुणो लच्छिं ॥३॥ डुव्वाय खुभिय जलनिहि, उ

ग्गड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय विसंठु
ल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ
जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पा
स जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंति
नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालाव
लि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ डज्झंत मुद्धमि
य वहु, भीसरणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जग
गुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअ
णाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ ज
लणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीस
ण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्ग
भुअंगं नवजल य, सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिछुढ्ढ विसम विस
वेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसि द्ध, मंत गुरुआ न
रा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद
सद्दूल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उ
ल्लुरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह

वसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महा कायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभ त्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, न हमणिमाणिक पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वड्डि उ च्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नव जलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चा सन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअ लं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिरक खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभिन्न करि कल, ह मुक्कसिक्कार पउरं मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निव हा भडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल

जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सवा इं ॥ १८ ॥ एवं महा भयहरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय भय जक्ख रक्खस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्ख पीडासु ॥ संझासु दो सु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुं गस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल भुवणच्चि अ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः॥

॥ तं जयउ जय तिउं, जमिउ तिवाहि वेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअंभ, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा, निहय कुलेसा पसउ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिउ, स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दढकम्म

वीआ, वीआपरमिठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा
तिजय पसिद्धा, हणंतु डुग्गाणि तिठस्स ॥ ३ ॥
आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥
आयरिआ तह तिठं, निहय कुतिठं पयासंतु
॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगावा, यगाय सिअवा
य वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणिं
तु सवस्स संघस्स ॥५ ॥ निवाणसाहुणिज्जिअ,
साहूणं जणिअ सव साहज्जा ॥ तिठप्पनावगा
ते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग
यं नाणं, निवाणफलं च चरणमविहवइ ॥ ति
ठस्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं॥ ७ ॥
निठउमो सुअधम्मो, समग्ग नवंगि वग्ग क
य सम्मो ॥ गुणमुठिअस्स संघस्स, मंगलं
सम्ममिह दिसउ ॥ ७ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो,
संपाविअ नवसत्त सिवसम्मो ॥ नीसेस कि
लेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥
॥ए॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो

कुणंतु तिवस्स॥सिरिवद्धमाण पहुपय; डिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जियपडिवक्खाजक्खा, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्खा ॥ सिरि वंभ संति सहिआ, कय नयरक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंवा पडिहयडिंवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयण स्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अच्छुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सास ण कय रक्खा, जक्खा चउवीस सासण सुरावि॥ सुहभावा संतावं, तिवस्स सया पणासंतु ॥ ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरया कुप हाउ सव हासवे ॥ वेयावच्च गराविअ, तिवस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग, विहिअ भवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय

वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, डु
हाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवा
लासक्खि, त्तवालया नवग्गहा सनरक्कत्ता ॥ जो
इणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥
॥१८॥ सहकाल कंटएहिं, सविठिवछेहिं का
लवेलाहिं ॥ सव्वे सव्वठ सुहं, दिसंतु सव्वस्स
संघस्स ॥ १९ ॥ ज्ञवणवइ वाणमंतर, जोइस
वेमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ,
दलंतु डुरिआइं तिह्स्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स
जलंतं, गह्इ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिह्
स्स ज्ञगवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥
सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ज्ञविसासणं ज
ए जयइ ॥ सिद्धिपह सासणं कुप, ह नासणं स
व ज्ञय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसज्ञसेण पमुहा,
हयज्ञय निवहा दिसंतु तिह्स्स ॥ सव जिणाणं
गणिहा, रिणो णहं वंठिअं सवं ॥ २३ ॥ सिरि
वद्धमाण तिह्ा, हिवेण तिह्ं समप्पिअं जस्स ॥

सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल सं घस्स ॥ १४ ॥ पयइएनहिआ जे, महाण दि संतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु सम्मं, जि णगणहर कहिय कारिस्स ॥ १५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, डुस्सदं तस्स नत्थि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिउ,सुनिठि अठा सुही होई १६ इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं ४

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं,उवहिव थुणा मि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निह य विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दा विअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त परतित्थ जणिय संखोहा ॥ पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थो हा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय दुह दा हा सिवंब तरुसाहा ॥ संपाविअ सुहलाहा,

खीरोदहिणुव अग्गाहा ॥ ४॥ सुगुणजण जणि
अ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्जा ॥ सि
वसुह साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा
॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा
सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंझं नामं, नामं
न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ जिण
देवो, देवायरिउ डुरंत भवहारी ॥ सिरि नेम
चंद सूरी, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सि
रि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो
॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुह
जणउ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ण पच्चलो
निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, त
ऊणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरउ डुल्लह
महिव, छुहस्स अणहिल्ल वाडए पयडं ॥ मुक्का
वि आरिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥१०॥
दसमछेरय निसिवि, प्फुरंतु सच्छंद सूरिमय ति
मिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण हयमहिअ दो

सेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ
गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दित्ती,
जिणचंद जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ नवं
ग सुत्तड, रयणकोसो पणासिअ पउसो ॥ न
वनीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय
दोसो ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, परूवणा
करणबंधु रोधणिअं ॥ सिरि अनयदेव सूरी,
मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सा
वय संतासो, हरि व सारंग नग्ग संदेहो ॥ ग
य समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कवर
सो ॥ १५ ॥ नीमनव काणणमिअ, दंसिअ
गुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउ,सू
री जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअ सच्च
रणो, चउरणुउग पहाण सच्चरणो ॥ असम
मयराय महणो, उड्ढमुहो सहइ जस्स करो ॥
॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणों
गणिअ सावउड नउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहि

जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो एस स्व हयतिमि
रो ॥ जिणचंदा भयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा
जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, भयदेव
पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, द्धमा
ण तित्थस्स वुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं स
म्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा व
यसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥
जिणदत्त गुणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिं
ति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मि
आ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तमस्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण
मुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आ
वासं॥१॥ इत्यादि ॥ भवेभवेपासजिणचंद पर्यंत
संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं
सप्तम स्मरणम्॥७॥इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम्॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥२॥युग्मं॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, ना

ऱ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र ! लोके ॥१७॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभाररनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं

हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तो
षमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥२१॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या
सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दध
ति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति
स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः
परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः परस्ता
त् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, ना
न्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥२३॥ त्वा
मव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्व
रमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमने
कमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरो
ऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिव
मार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरु
षोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहरा

य नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमोजि
नभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र
यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाश
तया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥ उ
च्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपमम
लं भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्तत
मोवितानं, विंवं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते
तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंवं वियद्विलसदं
शुलतावितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्रर
श्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं;
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छ
शांकशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरि
व शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति
शशांककांत,मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता

पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृकुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतं

तं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फ
णिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन
निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य
पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद,
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवा
करमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित
वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ यु
द्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकज
वनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभि
तभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवा
डवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रा
सं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥
उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशा
मुपगताच्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजो
मृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरू

पाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्॥धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ बृहच्छांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत

१७, संबर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, नद्रंकर २४॥ एते नावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा नवंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपु विजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, नानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंन्न १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन२३, सिद्धार्थ २४॥इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा

१४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुवेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी

१८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र

देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ ९ ॥ अक्षीणको
शाकोष्ठागारा नरपतयश्च नवंतु स्वाहा ॥ ॐ
पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधुवर्गस
हिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो नवंतु ॥ अ
स्मिंश्च नूमंमले आयतननिवासिनां साधुसा
ध्वीश्रावकश्राविकाणां, रोगोपसर्गव्याधिदुःख
दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टि
पुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः नवंतु ॥ सदा
प्राडर्नूतानि डरितानि पापानि शाम्यंतु श
त्रवः पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शा
न्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्य
स्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शा
न्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे
गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे
गृहे ॥२॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टडुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नडु
र्निमित्तादि॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं ज
यति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधि

पराजसंनिवेशानाम्॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याह
रणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांति
र्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजन
पदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भ
वतु, श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगो
ष्ठिकानां शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ ॥ ॐ
ह्रीँ श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्र
तिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृ
हीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमां
जलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः
शुचिवपुः पुष्पवस्त्रश्चंदनाभरणालंकृतः, चंदन
तिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमु
द्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमि
ति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायं
ति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठं
ति मंत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके
॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह

नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, अ
सुहोवसमं शिवं नवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवम
स्तु सर्वजगतः, परहितनिरता नवंतु नूतग
णाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी नवंतु
लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते वि
घ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिने
श्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीलघुशांतिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं
श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं
आचार्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उ
पाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौ
तमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥
एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः ॥ मंग
लानां च सर्वेषां, प्रथमं नवति मंगलं ॥२॥ ॐ
ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क
मलप्रनसूरींद्रो, नाषते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ ए

कभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभि
लषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूश
य्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवता
ग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अ
र्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आ
चार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये,उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥
साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च॥ सू
र्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ द
क्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं
गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥८ ॥ पूर्वा
शां श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः॥ दक्षि
णाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ए॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः॥ उत्त
रां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥१०॥
पातालं भगवानर्हं, न्नाकाशं पुरुषोत्तमः॥ रोहि
णीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥
ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने॥ संभ

वः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥१२॥ उ
ष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः॥ जि
व्हां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥१३॥
कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः॥ श्रे
यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥
अंगुलीर्विमलो रक्षे,दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सु
धर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥१५॥
श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं॥ मल्लिरूरू
पृष्टिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥ पादांगुली
र्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं॥ श्रीपार्श्वनाथः
सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी
जलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदश
षपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वा
रे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौरा
ग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अका
लमरणे प्राप्ते,दारिद्र्यापत्समाश्रिते॥ अपुत्रत्वे
महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी

शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते॥ नद्युत्तारेऽध्व वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भ यं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपं जरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभरा जेंद्र, श्रियंस लभते नरः ॥२३॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आ सादयेत्सःकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगछे, देव प्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥२५॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं उठे परभात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नव कार, जेम पामे भव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म,

कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चरकाण, सूधि पाले जिननी आण ॥ नणजे गणजे स्तवन सज्झाय, जिणहूंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, डव्यनावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूपण सूजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥६॥ साहम्मिवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ डुःखीया हीणा दीना देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं म करे अनिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, डंग अ

धिकानो परिहार ॥ म जरिश केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म जांख ॥ ए ॥ अनंतका य कहीये बत्रीश, अजक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण नवि कीजें किमे, काचां कवला फ ल मत जिमे ॥१०॥ रात्रिजोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ व ली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पी तां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे य त्न, पातक ठंमी करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥१३॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धो इश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अन रथ दंम, मिथ्या मेल म जरजे पिंम ॥ १५ ॥

समकित शुध्द हैडे राखजे, बोल विचारीने नांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंन्न, पालो शीयल तजो मन दंन्न ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं,ऊघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुन्नचित्त ॥ ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम न्नांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण न्नव न्नवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय,सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, न्नेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये न्नवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुर धाम ॥ कहे

जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी डुःखहरणी हे एह ॥ ११ ॥ इति श्री श्रावकनी करणीनी स०॥

॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करी ने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिह री, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडिलेही रा ख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशा लायें थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो सं योग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमा र्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिकमि पीछें खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहे ह. इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिले हे. पीछें उभो थई, खमासमण देई इछा का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इछं कही, खमासम ण देई. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह ठाउं?

गुरु कहे ठाएह, पीठें इच्छं कही खमासमण देई उनो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इछकार नगवन् पसाउ करी, पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पछिं करेमि नंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वोसिरामि॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चरकाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चरकाण प्रारंनः ॥

करेमि नं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सबउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सबउ बंनचेर पोसहं, सबउ अबावार पोसहं, सबउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चरकामि, जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स नं ते पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुभाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊभो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणें वेसणो संदिस्साउं? वेसणो ठाउं ? कही, पीछें दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्साउं ? सिज्झाय करुं ? कही खमासमण देई ऊभो थको, आठ नवकारनो सिद्याय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं ? पांगरणुं पडिग्घाउं ? कहे. ए सर्व सामायिकविधि पूर्वें कह्यो छे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे. पहिलां इरियावही पडिक्कमी

छे, तेमाटें इहां सामायिक दंरूक उच्चखां पीछें इरियावही नही पडिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमणवेलासीम सिझाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न्न०॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इछं कही, खमासमण देई कहे. इछाका० ॥सं०॥न्न०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह॥ पीछें इछं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं इत्यादि नमस्कार नणे,जो पडिलेहणवेला नहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

करे,ते विधिपूर्वें आग्रंथना ४७ पृष्ठमां लिख्यो छे तो पण संक्षेपें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें, इच्छा का०॥सं०॥भ०॥ पडिलेहण करुं?कही मुहप त्तीपडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें अंग पडिले हण संदिस्साउं! अंग पडिलेहण करुं? कहे. पीछें गुरुवचनें इछं कही. धोतियो कणदोरो पडि लेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई. इछकार भगवन्! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अ ने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो प ण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे. पी छें खमासमण देई॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमा समणे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उही पडिले हण संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उही पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंमिलांपडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अण हियासे ॥ १ ॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥२॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अ णहियासे ॥५॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहि यासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥७॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥९॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अ हियासे ॥१०॥ आगाढे मज्झे पासवणे अहिया से ॥११॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ ॥१२॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अण हियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासव णे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१५॥ अणागाढे आस

न्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे म
ध्ये पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दू
रे पासवणे अणहियासे ॥१८॥ अणागाढे आ
सन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणा
गाढे मध्ये उच्चारे पासवणे अहियासे ॥२०॥ अ
णागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥२१ ॥
अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥
आणागाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥२३॥ अ
णागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थं
ण्डिलपडिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंण्डिलां कहां कहां करनां ?
सो लिखते हैं.

॥ ६ थंण्डिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें
पासे ३, वामपासे ३, पडिलेहे ॥ ६ थंण्डिलां
दरवज्जेके भीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पडि
लेहे॥६ थंण्डिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पडि
लेहे॥६ थंण्डिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा

होवे, ते दोनुं तरफ पडिलेहे ॥ इति २४ थंडि
ला पडिलेहणविधिः संपूर्णः ॥
पीछें इच्छं कही, कंबल वस्त्रादि पडिलेही पोसह
शाला प्रमार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक ख
मासमण देई इरियावही पडिक्कमे. इहां आचा
र दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इछाका०॥
सं० ॥ भ०॥ वसती संदिस्साउं? वसती पडिले
हुं? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि
पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें॥ इछाका० ॥ सं०भ०
॥ सिचाय संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह.
बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥
सिझाय करुं? गुरु कहे करेह. पीछें इछं कही
नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख
सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान क
रे, भणे, गुणे, वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण
पहुर दिन चढ्यां. उग्घाडा पोरिसी अथ

वा, बहुपडिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पडिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पडिलेहण करुं? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे ते वाम पासें बेसे. पीछें ॥इच्छाका०॥सं०॥भ०॥ चैत्यवंदन करुं? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संडासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई

नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तिहं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. उन्नो थई अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती० अन्न त्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० स व्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक न व० पारी दूसरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुरकर वरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार०पारी तीसरी थुईकी गा०पीछें सि द्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च गराणं०अन्नत्थू०इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर वैठकें नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसीतरें चार थुइयें देव वांदी वेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. न मोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे. पीछें जयवीयराय कही. नमोत्थू णं सवे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पां चे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करे; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुई सें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही "जावंति चेइयाइं" गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही, जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चरकाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चरकाण पारे ॥

॥ हवे पच्चरकाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर

एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्च
रकाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, प
डिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुह
पत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इ
च्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पाणहार अमुक पच्च
रकाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछेंय
थाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥
सं० ॥ भ० ॥ पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आया
रो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्च
रकाण चउविहार कर्यो, एम कही एक नव
कार गुणी पच्चरकाण फासियं, पालियं, सोहि
यं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आ
राहियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंद
न करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंभवें
अतिथिसंविभाग करी पाणी पीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्र
मुख पच्चरकाण पारी आहार करे. पीछे आ

सण वेठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चक्के, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चक्काण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो वहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ गमणागमणं आलोयहं? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इछं कही गमणागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संमासा पूंजी, थंमिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही

करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खम्यिं, जं विराहियं, तस्स मिछा मि डुक्कडं, एम कही वेसे. पीठें पडिलेहण वेला सीम सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे. इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह. इछं कही दूजे खमासमणे-इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं ? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीठें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीठें गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंमासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठें काजो शुद्ध करी, उद्धरी, एकांतें विखरतो परठवी इरियावही पडिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार जगवन् पसाउ करी पडिलेहणां पडि

लेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥भ०॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें ॥इछाका०॥सं०॥ भ० ॥ सिद्माय संदिस्साउं ? सिद्माय करुं ? उक्त रीतें क्षणमात्र सिद्माय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पच्चक्के ॥ उ पधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वां दणां दोय देई, पच्चक्काण करे. पीछें एक खमा समण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि थंमिलां पडिलेहण संदिस्साउं ? वीजे खमास मणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उपधि थंमि लां पडिलेहुं? गुरुवचनें इछं कही, दोय खमास मणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वेसणो संदि स्साउं वेसणो ठाउं ? कही वेसे. वस्त्र कंवलादि

पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. उपवासी तो ठे तेमाटें सर्व पागे कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष ठे ॥ पीछें कालवेला सीम सिद्याय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिलां पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवछरीयें संवछरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इछा० ॥ देवसियं आलोएमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें "गणे कमणे चंकमणे" इत्यादि पाठ कहे. खुदोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्याय संदिस्साउं? सिद्याय करुं? कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिद्याय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें लिख गये हैं. वहांसें जान लेनां.

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, तो आसन्न कहे तो थको, भूमि प्रमार्जें थंडिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे, प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. भगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. पीछें राईसंथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राई संथारो

गवुं ? पीछें गुरु वचनें इवं कही, चउक्कसाय प
डिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक
जयवीयराय सुधी चैत्यवंदन करे. नूमि प्रमा
र्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्र
मार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे वे
सी,तीन नवकार तीन करेमि नं ते ऊच्चरी॥णमो
खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणु
जाणह जिछिज्जा अणुजाणह परम गुरु' इत्या
दि राइ संथारा गाथा नणी, वाम हाथ सिरा
णं देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरि
त्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्र
मार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त
विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिकमे ॥
पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिवाय करी
सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवका
रादि गुणी, इरियावही पडिकमे. खमासमण दे

ई कुसुमिण डस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वो क्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न प डिक्कमे. पीछें दोय खमासमणें सिद्धायसंदिस्सा वी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला सीम सिद्धाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कम णो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवठणाकी इत्यादि पा ठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी पडिलेह ण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करी, धर्म शाला पूंजी काजो ऊध्धरी इरियावही पडिक्कमे. दोय खमासमणें सिद्धाय संदिस्सावी, उपदे शमाला प्रमुख सिद्धाय करे. पीछें पोसह पारे॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर ख मासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीछें य थाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इछा

का० ॥ सं० ॥ ज०॥ पोसह पार्खुं? गुरु कहे; आयारो न मोत्तवो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उनो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं? गुरु कहे पुणोवि कायवो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पार्खुं? गुरु कहे आयारो न मोत्तवो. पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उनो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन नवकार गुणी संभासा पडिलेहे. गोभालीयें वेसी मस्तक नमावी, "जयवं दसन्नभद्दो" इत्यादि भावनारूप गाथा कहे. पीछें पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविभागव्रत साचवण निमित्तें साधु भ

णी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शु
द्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार
पीछें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोहीज शो
ष आहार आप करे॥ इति आठ पुहरी पोस
ह ग्रहण पारण विधिः॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो
विधि कहे छे॥

॥ घरथकी निश्चित थई धर्मस्थानकें आ
वी, सर्व उपगरण पडिलेही, कचरो विधिशुं प
रठवी इरियावही पडिक्कमे. खमासमण पूर्व
क आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पडिलेहे,
आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वें लिखा है.
तिमहीज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज क
रणो हुवे, तो पोसह दंमक उच्चरतां जावदिवसं
पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठ
पुहरीकरवो हुवे,तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि
एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक विधि सर्व करी

चैत्यवंदन कुसुमिणडुस्समिण काउस्सग्ग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे ७, अने जो पूर्वे पडिक्कमणो गुरु साथें कस्यो हुवे, तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे ७, तथा जो गुरुसें जूदो पडिक्कमणो कस्यो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां देई ॥ इछाका०॥ सं० ॥ न० राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्नुठिउमि अप्निंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सव पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटें पीछें गुरु साखें पच्चखाण उपवासनो करे., पीछें दोय ख

मासमणें वडुवेलं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पडिलेहण तो पूर्वें करी ढे, तो पण आदेश मागवो. ते एम खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पडिलेहण संदिस्साउं? बीजे खमासमणें पडिलेहण करुं? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीढें इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पडिलेहे. पीढें वली खमासमण देई. इछकार नगवन्! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे, पीढें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो रह्यो हुवे, तो पडिलेहे. नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय खमासमणें सिघाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिघाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिम हीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसह तो

पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पच्चक्काण किया, पीछें दोय खमासमणें उही पडिलेहण संदिस्साउं? उही पडिलेहण करुं? कहे,पण थंम्लिा पद न कहे. अने थंम्लिा नहीं पडिलेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधि ही, सो बताई॥इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहणविधिः

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चर्यो है. पीछें संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो भाव थयो, तो पच्चक्काण कियां पीछें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंम्क उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो

दे, तिम करे पण सामायिक उच्चस्यां पीछे दोय खमासमणें सिञ्जाय संदिस्सावी आठ नवकार कही वेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछे दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उही थंमिलां पडिलेहण संदिस्साउं उही थंमिलां पमिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इत्तं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो भाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सखो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिक्कमे. पीछें चउविहार पच्चक्खाण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंमक उ

च्चरे. तिहां दिवसेसंरात्ति पज्जुवासामि कहे. सं ध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछें वि हुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते उच्चरे. दोय खमासमण देई सिद्या य संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीता दिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे. पीछें बे खमासमण देई, अंग पडिलेहण संदि स्सावी, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर बे खमासमण देई, उही थंभिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पडिलेहे. जो सर्व उपगरण पडिलेह्यां हुवे, तो पण थानक शून्यता टालवा भणी वली आसण पडिले ही, पडिक्कमण वेला सीम सिद्याय ध्यान करे.

पीछें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिलां पडिलें
ही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली
सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि
पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि
पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ गमणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गमणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥
हरिअकायसंघट्टे वीयकायसंघट्टे थावरकाय
संघट्टे छप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, छ
च्चिंतिय छप्भासिय छच्चिठिअ ॥ इच्छाकारेण
संदिस्सह, इच्छं तस्स मिछा मि छुक्कडं ॥ १ ॥
संथाराउवट्टणाकी, आउट्टणाकी, परिअट्टणाकी,
पसारणाकी, छप्पइयासंघट्टणाकी, अच्चखुविस
यकायकी, सव्वस्सविराइअ, छच्चिंतिअ, छप्भा
सिअ, छच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं
तस्स मिछा मि छुक्कडं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंरुणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लच्ची बहु बुध्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिच्चरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सव्व जव्वाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुवार पोयं, कलंका चली पंकपरकाल तोयं ॥ मणोवंगियच्छे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजोजलीणा, कलारूव लावण सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाणं, सिरी जारई देहि मे सुध्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीव
त जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं,
तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं॥ वलदै
कादश्यां सहसि लसडुद्दाममहसि, क्षितौ क
ल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥सुप
र्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्नूमिवलयं, सदा स्वर्ग
त्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्या
पुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥
जिना एवं यानि प्रणिजगडुरात्मीयसमये,
फलं यत्कर्त्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अ
निष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि०
॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता,
स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः
॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः,
क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रसकिधर, धपधोरवं॥दोंदोंकि दों दों,दाग्डिदि दाग्डिदिकि, डमकि डण रण,डेणवं॥झझिंझंकि झंझं, झणणर णरण,निजकि निजजन,रंजनं॥सुरशैल शिखरे, न्भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगूडदां,धुधुकि धुट नट,पाटवं॥गुणगुणण गुणगण,रणकि णेंणें,गुण णगुणगण,गौरवं ॥ झझि झेंकि झेंझें,झणण रणर रण, निजकि निजजन, सज्जना॥कलयंति कमला,कलितकलमल, सुकलमीश,महेजिनाः॥२॥ ठकि ठेंकि ठेंठें,ठर्ह्कि ठर्ह्कि,ठर्ह्किपट्टा,ताड्यते॥ तललोंकि लोंलों, त्रेंपि त्रेंपिनि, मेंपिमेंपिनि, वाद्यते॥ठँ ठँ कि ठँ ठँ,थुंगि थुंगिनि,धोंगिधोंगिनि, कलरवे॥जिनमतमनंतं,महिम तनुतां, नमति सुरनर,सुठवे ॥ ३ ॥ पुंदांकि पुंदां, पुपुड्दि पुंदां पुपुड्दि दोंदों,अंबरे॥चाचपट चचपट,रणकि णें

मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वं चाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवछल करियें वारं वार, केइ भावना भावे केइ तपसी शिलधार ॥ अडदीह पूज सण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोभितं, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शं ख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरि वर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥१॥ अ ष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावा पुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता

मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल सं घँ सुखकरू ॥ ७ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, ढ छेद ग्रंथ प्रसत्र अत्रा चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग धार उदार नं दीसूत्र जिनमत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी भा प्य पँतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ इहुं दि सें बालक दोय जेहने सदा भवियण सुखकरू, दुख हरें अंबा लुंब सुंदर डरिय दोहग अपह रू॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥४॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुपष्ठतपसा पर्यंकपर्या सनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्ल शालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे तू र्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहि तं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥१॥ यज्ज्ञागमनोज्ञ

व्रतवरज्ञानाङ्करासिक्तणे, संभूयाशु सुपर्वसंत
तिरहो चक्रे महस्ततत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभ
वादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघाया
नघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसि च ॥ २ ॥
अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभि
ध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सू
त्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृ
शां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेत
श्चमत्कारि यत् ॥३॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभाव
नपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरा
सुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन
चंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या
चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम्॥
॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम,
अरज सुणो एक जगगुरु मुज आशाविशराम

॥ पूरव विदेहें विजय जली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ ॥१॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर जाण ॥ धन ते जविजन जे रहे प्रजु ताहरे पसंग,वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग॥२॥ सुगुरु मुखें प्रजु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी छे मुज सघली जोड, पण प्रजु लग पहूंचीजें तेह नहिं पग दोड ॥ ३ ॥ आमा मूंगर अति घणा विच वहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रजुजी एटली दूर ॥ आंखडली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांखडली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटडली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर साथें कहुं

संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाडे नि कले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण भरतना वासी भविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुनजर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥६॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियडे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं छे माहरो आतमराम, नहिय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुझशुं धर जो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोप रि महिर अछेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टा लो दीन दयाल, पालो बिरुद संभालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर छतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे छे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने

जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रनु तुज संग, लाज उदयजिन चंद लहे नित प्रेम अनंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ वीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुम्ह नगते नणुं ॥ नेटवा पायकम ल नाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीन वुं ते सुणो ॥१॥ तुम्हशुं कूड अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि नांखियें ॥ अति सवल मुज हिये मोह माया घणी, एक मन नगति किम करूं त्रिनुवन धणी ॥२॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चटको चढे लोन वयरी नडे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयडे

माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व नवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल नमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियडे वस्युं, वापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रनु पालशुं, दुःख नंभार संसार नय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवडी माहरी नगति जाणी करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश ॥ एम ऋद्धि वृद्धि, समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुखकरो ॥ उवज्झाय वर श्री,नक्ति लानें, थुएयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु,जीव जीवन, क

री सामि, मया घणी ॥ कर जोडि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आशा, मन तणी ॥१८॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगडे गह गह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडूं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥ न्यानी श्वासोद्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोड वरस कही ए ॥ ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझा

र ॥ किरिया छे सही ए, पण पाछें कही ए ॥ ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें नख्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ नगवंत नांखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ए ॥

॥ ढाल दूजी ॥ काल्हरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो नवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, नवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण नला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षटमासें लीजियें, शुनदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ वे कर जोडी नावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पडिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पां० ॥

॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंन टालो रे ॥ पाचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे॥पां० ॥५॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी,पांचमि करो शुनदृष्टि रे॥पां०॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी॥

॥ हिव नवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अव सर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्यजोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो व लिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमीदिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्ग रली॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पु स्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजियें ॥१॥ ढाल ॥ सिध्धांतनी रे पांच प्र ति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच कोरा रे लेखण पांच मजीसणा,

न श्रीकार रे ॥ पां० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, मह्हारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पासुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोडी पास ॥ सेवा सारे जेहनी, सुर नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मोमन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि ठविय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भव दुःख भंजन ज

नमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा, माहरां विकस्यां अंगो अंग ॥३॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिडे नहिं, साहिवा एह उत्तम आचार ॥४॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥अ०॥ किसके हरि हर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे,साहिव शिवसुखनोही ठाम ॥सो० ॥अ०॥६॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥सो०॥अ०॥७॥ संवत सतरेशें वावीशें,वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जुहारतां, मोरी सफ

ल फली सहु आशा ॥ सो० ॥ अ० ॥ए॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥१॥ विमलजिन म्हारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिल्यां जी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बावल घाले बाथ ॥वि०॥४॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥वि०॥५॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बैठी जुडी, मागशि

र शुदि इग्यारश वडी ॥२॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥मा०॥३॥ नमिने ऊपनुं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिमहीज ॥ पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जे वडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो,लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहारविधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥ ॥ मा०॥८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जाव

जीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष त
णी पावडी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्री
कार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो
काउसग्ग गुरु पाये पडी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे
स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥
मुगतिपुरी कीजें ढूकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन
इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें
सर्व ॥ व्रत पच्चक्खाण करो आखडी ॥ मा० ॥
॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्त
वन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो घा
हडी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशीस्त०॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, ध्यान धरुं
पल पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी,
सेव करुं छिन छिनमें ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मन
तरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो
मन प्रभु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चातक चित्त घ

नमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे,
अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीर्त्ति सुखसा
गर तुमही,साहिब तीन भुवनमें॥तुं०॥३॥इति॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान
निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगा
री प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, सं
घ सकल आधारो रे, हिव इण भरतमां ॥ कु
ण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ वि
हूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे
कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वी
र० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां प
रहां अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकु
ल व्याकुल थायो रे ॥वीर० ॥४॥ संशय छेदक
वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख
ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥
॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी

सववाद ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो नविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ नव नव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव०॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम्॥

॥ शत्रुंजय ऋषन्न समोसस्या, नला गुण नस्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ नरतें नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति नलो, त्रिभु

वन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ती०॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, ऊद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमे जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंतदेहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंमल चाक चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशा

श्वती, प्रतिमा वती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं बहेनी, विमलाचलगिरि जईएं रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदि जिनंद इम भांखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आज० ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छेडीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां भरतां, आतम शुद्ध सुभावें ॥ कोडि भवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुंजो, जोतां लागे मीठे ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ न दीठे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥

नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें उलग करस्यां॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ प चरंगा, हार सुगंधां गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥६॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमतां, भव सायर निसतारियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव न वाणुं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ उदे ए गिरिवर ल हियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद स दा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिद्धाय लि० ॥

॥ जग चूडामणिभूउ, उसभो वीरो तिलो य.सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्‍

तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छ
म्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया नि
रसणा, जए ज्जए उवमाणेणं ॥ २ ॥ जइता ति
लोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स
॥ इय जीयंतकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥
न चइज्जइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिण
चंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं वि,मेरु जहा वायगुं
जाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणउ, पढम गण
हरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमहं, विम्हि
य हियउ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया,
पयइउ तं सिरेण इछंति ॥ इय गुरुजण मुह भ
णियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह सुरग
णाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ ज
हय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो
॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ ए
स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मु
णी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुग

प्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंभीरो धिइमंतो, उ
वएसपरो य आयरिउ ॥ए॥ अपरिस्सावी सो
मो, संगहसीलो अनिग्गहमई य ॥ अविकत्त
णो अचवलो, पसंतहियउ गुरू होइ ॥ १० ॥
कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दा
उं ॥ आयरिएहिं पवयणं,धारिज्जइ संपयं सय
लं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा
सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ माणं, परिय
त्तइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दम
ग, स्स अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ
आसणगहणं, सो विणउ सव अज्जाणं ॥ १३ ॥
वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ सा
हू ॥ अभिगमण वंदण नमं, सणेण विणएण
सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसव
रदेसिउ पुरिसजिठो॥लोएवि पहू पुरिसो, किंपु
ण लोगुत्तमे धम्मे॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो,
तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहि

यं, आसी किररूववंतीणं ॥१६॥ तह वि य सा रायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयरठि एण इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महि लाणासु बहुयाण वि, मज्जाउ इह समत्त घरसा रो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ,जणेवि पुरिसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥किं परजण बहुजाणा,वणाहिं व रमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पस न्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवे सं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो,संकइ वेसेण दिक्खिउमि अहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहठिउ अप्पसक्खिउ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन

वि सीउन्द वायविद्यडिउ ॥ संवच्छरमणसीउ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीउ गविउ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गरहिउ, जणेवि वयणिज्जयं ल हइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्व केइ बुज्झंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिं से कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमा ण वासीवि परिवडंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, सं सारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स ऊक्खमल्लिहियए॥जं च मरणा वसाणे, भव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ ग यकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलछीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पडंति

भ्दे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सङ्करा इति पावचरियाइं ॥ नयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥३२॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिद्धा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिद्धाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि नंते ३, कहियें. अणुजाणह जिठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंझिअसरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए गमि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पडिले हा ॥ दवाई उवउगं, ऊसासनिरुंनणालोयं ॥ ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेण

वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वंधण, कल
हा नरकाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्नं, मा
या मोसं च मिछत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइं सु, रक
मग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥ डुग्गइनिवंध
णाइं,अठारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगो हं नत्थि
मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सचि ॥ एवं अदीणम
णसो, अप्पाण मणुसासए ॥७॥ एगो मे सास
उ अप्पा,नाण दंसणसंजुउ॥सेसा मे बाहिरा भा
वा, सव्वे संजोगलक्कणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला
जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग सं
बंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ए ॥ अरिहंतो म
ह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्न
त्तं तत्तं,इयसम्मत्तं मए गहियं ॥१०॥चत्तारि मं
गलं,अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,साहू मंग
लं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्त
मा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्त

मो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं प
वज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पव
ज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥
अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया॥अ
रिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं
॥ १ ॥ सिद्धा य मंगलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देव
या ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं,वोसिरामि त्ति पा
वगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया
मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसि
रामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ, उ
वज्झाया मज्झ देवया ॥ उवज्झाया कित्तिअत्ताणं,
वोसिरामित्ति पावगं ॥४॥ साहूणो मगलं मज्झ,
साहूणो मज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,
वोसिरामि त्ति पावगं ॥५॥ पुढवि दग अगणि
मारुय, इक्किक्के सत्त जोणि लक्खाउ ॥ वणपत्तेय
अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥
विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरे

सु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्का य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सबजीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सबभूएसु,वेरं मज्झं न केण वि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहि अ डुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिकंतो, वंदा मि जिणे चउवीसं ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ,सबह जीव निकाय॥सिद्धहसाख आलो यणह,मझह वेर न भाय॥५॥सबे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सब खमाविया,मझ वि तेह खमंतु ॥६॥ इति राई संथारा गाथा स०॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदा नां बोल्यां महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घ णो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं०

॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥सु०॥९॥ इति सीतासती सिद्याय समाप्त॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखियो मुनी ए कंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निग्रँथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे०॥ए आंकणी॥इण कोसंबी नगरी वसे,मुज पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवस्यो हुं,हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥२॥ इक दिवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु जूरी र ह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन ओरडी, ओरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही,नहिं कीधी रे मोरडी सा र ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, की

धला कोडी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, प
ण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे०॥ ५ ॥ वेदना
जो मुक उपशमे, तो लेउं संजमन्नार ॥ इम
चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपा
र ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते
न्नणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागनो धरम वाहरो,
कोइ नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर
जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥
श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे स
रग मकार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गा
वतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि समयसुंदर तेह
ना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥श्रे०॥ए॥ इति॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिद्याय ॥

॥ कर पडिक्कमणो न्नावशुं, दोय घडी शुन्न
काण ॥ लाल रे ॥ परन्नव जाता जीवनें, संबल
साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणुं न्नावशुं
॥ए आकणी॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय

प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिनप्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली, एम दीये द्रव्य अपार॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह ल गार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउवि सत्थो,नलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे॥ व्रत संनारो रे आपणां, ते नवकर्म निवार ॥ लाल रे ॥४॥कर०॥ कर काउस्सग्ग शुनध्यानथी, पच्चरकाण सूधुं विचार ॥ लाल रे ॥ दोय सद्यायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, सुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिद्याय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरिजें हो ॥ नवियण मंगलिक सरणां चार ॥ आपदा टाले संपदा हो

॥ न० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियडे राखिजें
हो ॥ न० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी
हो ॥ न० ॥ केवलि नांख्यो धर्म ॥ ए चारू ज
पतां थकां हो ॥ न० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥हि०॥
॥२॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ न० ॥ ए चारू
मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्यां हो ॥न०॥ ए
चारूं तहतीक हो ॥ हि० ॥३॥ गेले घाटें चा
लतां हो ॥न०॥ समरुं वारं वार ॥ गामे नगरें
चालतां हो ॥न०॥ विघन निवारणहार ॥ हि०
॥ ४ ॥ झाकण साकण भूतडां हो ॥ न० ॥
सिंह चित्ता ने सूर ॥ ॥ वैरी डुसमन चोरटा हो
॥ न० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ५ ॥ सुख
शाता वरते घणी हो॥न०॥ जे ध्यावे नर नार ॥
परभव जातां जीवने हो ॥ न० ॥ सरणांको
आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आ
सता हो ॥ न ०॥ नेडो नहिं आवे रोग ॥ वरते
आनंद सुख सही हो ॥न०॥ वाला तणो संयो

ग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो
॥भ०॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहिं कोइ व
स्तुनी हो ॥भ०॥ याहि जगमें सार ॥हि०॥८॥
मनचिंता मनोरथ फले हो ॥भ०॥ वरते कोड
कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरतां हो ॥भ० ॥
निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए॥ ए सरणाने
ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए
सरणाकी कीरति कही हो ॥ भ० ॥ ध्यावो मन
ह मझार ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने
हो ॥ भ० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल्ल
इम वीनवे हो ॥ भ० ॥ सुनजो बाल गोपाल
॥ हि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको
राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर
पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥१॥ तारणत
रण जिनेसर लख कें,भेटे सहु भवि चित्त सुख

पाय ॥ चा०॥२॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रभु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखडियां, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय जलके, शशि सूरज सम भास॥ मे०॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥ प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे०॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ठुमरी॥ राग जंगलो॥सुणो सुजाण नेमजी, हांरे में खडी पुकारुं नेम तुंही तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें म्हारो ॥

सुजा० ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं भव भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनपदं ॥

॥ राग भैरवी॥ नेम जिणंदजीसें आंखडली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे॥ ने० ॥मो० ॥ १ ॥ पहेली आय उन दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ने०॥मो०॥२॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन भयो मेरे, आनंद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ तुम विन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभुवन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ आ० ॥४॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोये जिया जाग रे ॥रा०॥ दोय घडी तडको अब रहियो, ऊठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर भरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥रा०॥३॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिधि, कोन खवर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भवदी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥३॥ उदय आशरो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे॥तु०॥४॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कडखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पा

यो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमलगिरि निरख क रि, रजत मणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भाव० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित पूछतां, ध न्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज ध न दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर डुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंमार पोतें भरा यो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, ऋषभजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥१॥ केवलज्ञान दि वाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, क्षायिक ज्ञेय अनंत लाल रे॥ श्री०॥२॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूते

एक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥३॥ चरणकमल पिं जर वस्यो, मुझ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उद्धारण हो तुमें, दूर हरो भवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुक्ख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापदगिरिस्तवनम्॥

॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥म०॥१॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावड शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥२॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां थून जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी,जाण जोईने ऊन जी ॥म०॥ ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भा

गीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे ऊन्न जी ॥म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुजनें पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कछुक दिलासा राज ॥सु० ॥१॥ चाडी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो में विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी, आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संभाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथा ली वाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥६॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध

धारी, श्रीध्रमसी सुखकारीराज॥सु०॥७॥इति॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रि जग तुमारो ॥ सांजलीने आव्यो तुम तीरें, ज नम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे बेराज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी॥ सहुकोनां मनवांबित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद बे राज तुमारुं, किम राखो बो दू रो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम क हेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥३॥ लटपटनुं हवे काम नही बे, परतक दरिसण दीजें ॥ धूंवाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या प तीजें ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंमण सा हिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुजने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार॥जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिव पुरी, हुं इण भरत मझार ॥ जि० ॥प्राण० ॥१॥ आझो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु न मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाडला, कागल द्युं किण हाथ ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ २ ॥ रमता थें मे जीहो एकठा, दिनमें दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांभरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ जि० ॥ प्रा०॥५॥

॥ अथ पद ॥ राजा हुं में कोमका ॥ ए देशी॥
॥ प्रह उठी में सदा नमुं, हाथ जोडके साम
॥ चोवीशे जिनराजकुं हुं, नित्य करुं परणाम ॥
॥ १ ॥ रिषन्न अजित संन्नव अन्निनंदन, और
सुमति जिनराज ॥ पद्म सुपार्श्व चंडा प्रन्नुसें,
लगन लगी हे आज ॥ २ ॥ सुबुद्धि शीतल
श्रेयांस सवाई, दीजें मुक्ति नाथ ॥ वासुपूज्य
जिन बारमा, विमल अनंत नाथ ॥ ३ ॥ धर्म
शांति अरुकुंथु जिनेश्वर, अरमल्ली महाराज ॥
मुनि सुव्रत नमि नेमजी, पार्श्व वीर जिनराज
॥४॥ कहे पाठककल्यानकी, निधान पूरो आश॥
कर जोडी गुण गावतां, चंदगोपाल दास ॥५॥

॥ पद ॥ अरे लालदेव इस तरफ
जलदी या ॥ ए रागमां ॥

॥ गइथी गइथी में मंदिर आज, वां बेठे थे
श्रीजिनराज ॥ १ ॥ कहा कहूं आंगीकी अजब
बाहार, मन प्रसन्न नया प्रन्नुकूं निहार ॥ २ ॥

मस्तकमें शोहे मुकुट अति सार, कानोमें कुंम लका हे झलकार ॥ ३ ॥ गले विच माला शो हे मोतिकी, बाजु कडां कंठी सोहे नीकी ॥ ४ ॥ सोनेके सिंहासन पर बेठे है राज, फुलूंका सु गंध भया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसें साहेब संभ व जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज ॥ ॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश, चंदगो पाल तुमारो है दास ॥ ७ ॥ इति ॥

सिर पें आखो पें गलेपें बिठाउं तुझकुं॥ए रागमां॥

॥ चिंतामणि पार्श्व प्रभु अरज करुं में तुझकुं, अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुझकुं ॥१॥ शत्रु मेरे अष्ट कर्मोंने फंदमें फसाया मुझकुं, तु म बिन और नहीं फंद छोडावे मुझकुं ॥२॥ ज्ञा न ध्यान तप जप नहीं, उदयें आवे मुझकुं ॥ ए क तेरा नामका आधार प्रभु है मुझकुं ॥३॥ न र नारि सुरवर नित्य नमे है तुझकुं, मेरा मनमें तो प्रभु ध्यान धरुं में तुझकुं ॥४॥ कल्यान नि

धान प्रभु अरज करे है तुझकुं, चंदगोपाल कहे दरस देखावो मुझकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ ठल्ला हमारा याद रखनां ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु नामकूं याद करनां, याद करनां नहीं विसरनां॥प्र०॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसें ध्यान लगाय कें, आतम मैलकों निरमल करनां ॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्त्वका ध्यान धरिकें, चार चोकडीकूं परिहरनां ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौवनसब है जूठा, इनको दिलमें खूब समजनां ॥ प्र० ॥३॥ शिव पदवीकी चाहा होवे तो, समकित बीज हृदयमें रखनां ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चंदगोपालकी आशा पूरीजें, अब में आयो आपके सरनां ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ ठुमरी ॥ लगना पानी पूरव मति जइयो रे ॥ ए रागमां ॥

॥ प्रभुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥प्र०॥

ए टेक ॥ प्रभुजीके नामसें पाप कटत है, अशु भ करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या जगत में और कोई नहीं है, एके प्रभुजी कहावे रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ माता पिता सब सुखके साथी, दुः खमें कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या दुनियां की जूठी है माया, जूठ जाल फेलावे रे ॥ क ल्याननिधानकी आस पूरीजें, चंदगोपाल गु न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरुं हुं वेरी हाथथी ॥ ए रागमां ॥

॥ प्रणाम होजो प्रभुनें, महाराजकूं प्रणाम ॥ महाराजकुं प्रणाम है जिनराजकूं प्रणाम ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकूं मैं, अरज करुं सार ॥ दुःखकी में बात कहुं, करीनें प्रणा म ॥ प्र० ॥१॥ मुजकों दुःख देवे बहु, कर्म श त्रुराय ॥ इनकों दूर कीजियें, करुं में प्रणाम ॥ प्र० ॥२॥ आपको मैं ध्यान धरुं, और न हिं ध्यान॥पूजा करुं नृत्य करुं, करुं बहु प्रणा

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझकों, पूरो मेरी आस ॥ दुसमनोकों दूर करो, करुं नित प्रणाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसंघकी आशा पूरो, गुन पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मंम्ळीको, मानो बहु प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥ कहुं हुं नसीबें दुःखीयो कीधो छे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजें, एक प्रभुजी को ध्यान धरीजें ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोवन जोर मायाके नसेमें, भूल गये तुम गुरु एक पलमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमें पडके गमारा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥ लोभ लुगाइसें मोह पायकें, बहोत दुःखी हुउ नरक जायकें ॥ कि० ॥ ३ ॥ पांच मित्रके फंदमें पडके,वारं वार तुं लक्ष भमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥ इनकुं छोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चंदगोपाल की आस पूरीजें, जैनप्रकाशक गुन गाईजें॥६॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज,वधाई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेघ घर आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात सुमंगला जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥ सुमति भई सहु देशमें रे, प्रगट भयो जयकार ॥ व० ॥ ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु सुर मल्यारे, मेरु शिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधें रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥२॥ घर घर रंग वधामणां रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुखकार ॥ व० ॥३॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोछव रंग रली री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम फली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन

चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंग
ल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री॥ वाजत
ताल मृदंग सुरपधनी, वेना वीन मोचंग वली
री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणींद्र पवा
यो, सव वसुधा धन धान्य भरी री ॥ कनक र
जत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय
गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जि
नशासन, व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री॥
हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा स
फलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीदादाजीको स्तवन प्रारंभः ॥

॥ विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगें पु
ण्यदशा सफली ॥ जिन कुशलसूरि गुरु अतुल
वली, मनवांछित आपे दादो रंग रली ॥१॥ मं
गल लील समे विपुला, नव नवय महोत्सव रा
ज्यकला ॥ सुपसायें गुरु चढती कला, सुकुलिणी
पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन थाये सत्र

ला, सदवास कपूर तणा कुरला ॥ हय गय र
थ पायक बहुला, कल्लोल करे मंदिर कमला ॥
॥ ३ ॥ वींझे चमर निसाण घुरे, नर वे दरबार
खडा पूहरे ॥ जय जय कर जोडी उच्चरे, सांनि
ध्य गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा भोजन
पान सदा, दुःख रोग दुकाल न होय कदा ॥
अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु परमदृष्टि प्र
सन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद घुमे,
बत्तीसे नाटक रङ्ग रमे ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप ह
में, सबला अरियण ते आय नमे ॥६॥ तन सु
ख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय र
नै ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुरमं
दिर भरे धनें ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आ
वे, करि श्यामघटा मेह बरसावे ॥ तिसीयां तो
य तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावे ॥
॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करे, प्रवहण भ
वसायर मध्यि फरे ॥ बूडंतां वाहण जे समरे, ते

आपद निश्चेसुं उवरे॥९॥खड खड खडग प्रहार वहे, सौदामिनी जिम सम सेल सहे ॥ कुशल कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रिणमल लहे ॥ १० ॥ थुंन सकल परचा पूरे, श्रीनागपुरें संकट चूरे॥ मंगलोर अधिके नूरें, देरावर भय टाले दूरें ॥ ११ ॥ वीरमपुर वानें सुधरे, खंभाईतपुर विक्रम नयरें ॥ जिणचंद सूरि पाटें पवरे, जसु कीरति महिमंफल पसरे ॥१२॥ पूरव पश्चिम दक्षिण आगें, उत्तर गुरु दीपे सोभागें ॥ दह दिशि जन सेवा मागे, श्रीखरतर गछ महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद गामें, गाईजें कुशल नयर गामें ॥ पूजे जे नर हितकामें, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री जिनकुशलसूरि साखें, सेवकजननें सुखिया राखे ॥ समरथ गुरु दरिसण दाखे, श्रीसाधु कीरति पाठक भाखे ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ गुरुदेवजीका स्तवन ॥ राग प्रन्नाती ॥

॥ श्रीजिनदत्त सूरिंदा, परम गुरु ॥श्रीजि०॥ परम दयाल दया कर दीजें, दरिसन परम आनंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक, सेवक जन सुखकंदा ॥ सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख दंदा ॥प०॥ श्री० ॥ १ ॥ निजपद सेवक सांनिधकारी, राखीयें गुरु रोजिंदा ॥ कर जोडी विनय युत विनवे, श्रीजिन हरख सूरिंदा ॥प०॥श्री०॥२॥इति॥

॥ राग सारंग ॥

॥ चरणकी वारी जाउं गुरुराय चरणकी ॥ ए आंकणी ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सद्गुरु, सफल घडी सेवा चरणकी ॥वा०॥१॥ प्रथम मंगल गुरु रायकी सेवा, अशुन्न करम सब हरणकी ॥वा० ॥च०॥२॥ दारिद्र न्नंजन अरि सब गंजन, पग पग सांनिध्य करणकी॥वा०॥च०॥३॥मोहे नांही

परिवाद अनेरी, सरण ग्रही इन चरणकी ॥श्रा० ॥च०॥४॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दासा, आशा पूरो सुख करणकी ॥श्रा०॥च० ॥५॥ इति ॥

॥ ताल ठुमरी ॥

॥ सदा सहाई कुशलसूरिंद, गुरु द्यो दोलत गुरु राय जी ॥सदा०॥ खाई न खूटे खरची न तूटे, दिन दिन वधे सवाय जी ॥ स० ॥ १ ॥ सकला सुत डर सुंदर नारी, शुभ परिकर सुख दाय जी ॥ स० ॥ मित्र समागम सुजस वधारण, नित प्रति हरष उत्साह जी ॥स० ॥ २॥ राजा परजा पाय नमे सहू, गुरु समरण सुपसाय जी ॥ स० ॥ दोपी दुशमन नृपभय पडियां, सद्गुरु करय सहाय जी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी विरियां संकट पडियां, समर्थ्यां आवे धाय जी ॥ स० ॥ भूख्यां भोजन तिसियां पाणी, निरधनियां धन दाय जी ॥स०॥४॥ संघ सकलनें द्यो सुख शाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स०

॥ थानक थिरता परिगल भोजन, पग पग कु
शल सहाय जी ॥ स० ॥ ५ ॥ अभय महा सु
खदाई सदगुरु, नवनिधि वंछित थाय जी ॥स०
॥ सुमति सवाई नित घर संपद, दान विशाल
लहाय जी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजें ॥
॥ अ० ॥ ऐसी भांति करो मेरे सद्गुरु, ज्युं म
न मूढ पतीजें ॥ कु० ॥ १ ॥ जलदातार विरुद
अमृतरस, श्रवण अंजलि भर पीजें ॥ सुरतरु
सम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम री
फे ॥ कु० ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि,
इतनी अरज सुणीजें ॥ परम भगत जिनराज
तुम्हारो,अपनो कर जाणीजें ॥कु०॥३॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर, सेवक
जन मन वंछित पूरण, समरयां होय हजूर ॥

कु० ॥ ८ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदय कर सद्गुरु मेरा, विनवे श्रीजिनचंद सूर ॥ कु० ॥ए॥ इति ॥

॥ परममंगल श्रीदादाजीकाव्यानि ॥

॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुः स जीया, द्युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या ॥ प्रसीदतः श्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वं पदं हस्तिपदे प्रविष्टं ॥ २ ॥

॥ नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी, नो वेतालपिशाचराक्षसगणा नो रोगशोकौ भयं ॥ नो मारी नच विग्रहप्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः, यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥ ३ ॥

॥ अथ सवईया लिख्यते ॥

॥ बावन वीर किये अपणें वस, चौसठ जो

गण पाय लगाई॥ भाइण साइण व्यंतर खेचर, भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई॥ वीज तडक कडक्क भटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क न काई, कहे धर्मसिंह लंघे कुण लीह, दिये जिनदत्तकि एक दुहाई॥१॥

॥ राजे युंज गोर गोर ऐसो देव नही और दादो दादो नामतें जगत्र जस्स गायो है, आपणेही भाय आय पूजे लखलोक पाय, प्यासनकुं रान मांझ पानी आन पायो है॥ वाट घाट शत्रु थाट हाट पुरपाटणमें, देह गेह नेहसुं कुशल वरतायो है, धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे साचो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है॥ २॥

छप्पा॥कुशल अंग उछरंग, कुशलविणजें व्यापारें॥ कुशल देव देहरे, कुशल धन राजदुवारें॥ पुण्य पसायें कुशल, कुशल श्रीसंघ भणीजें॥ वाहण आवे कुशल, कुशल घर घर गाईजें॥ श्रीजिनचंदसूरि पुहपट्टधर, नाम मंत्र आरति

टले ॥ श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां, नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥

॥ कुशल वडो संसार, कुशल सज्जन घर चाहे ॥ कुशलें मयगल वार, लच्छि घर कुशलें आवे ॥ कुशलें घन वरसंत, कुशल धन धन्न रु वन्नो ॥ कुशलें घोडा थट्ट, कुशल पहरीय सु वन्नो ॥ ए रसो नाम सद्गुरु तणो, कुशलें ज ग रलीयामणो ॥ भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणें करी, घर घर होत वधामणो ॥२॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पभणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ म णतणु वयणे एकंत करवि निसुणहु भो भविया, जि म निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिभरहखित्त खोणी तल मंडण, मगहदे स सेणियनरेस रिउदल बलखंडण ॥ धणवर गुवर गाम नाम जिहां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तह तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइंद भू

य भूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंभावर ॥ ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकजजलपाडिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास भमाडिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चयचाडिय ॥४॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंगरतिहां विधि वंचिय ॥५॥ नय बुध नय गुर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगु वरगाम तिहां, विप्प वसे वसभूइ, सुंदर तसु पुहवि भज्जा, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइठा जाणी

॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन वेठा, ततखिण मोह दिगंत पइठा ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डुंडुजि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कंत समोहिय जलहलकंता, गयणविमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ ॥ १३ ॥ तीरतरंरूक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाणुं वोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मो आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उंपम दीजें ॥ ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुरमहिय, पत्तनाह संसारतारण ॥

तिहिं देवइ निम्मविय, समवसरण बहु सुक्ख कार
ण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहिं कर दिनकार
सिंहासण सामी ठव्यो, हुई तो जयजयकार ॥१६॥
जास ॥ तो चडियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदे
य तो ॥ हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो
॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ तो ॥
दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥१७॥
मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥
वयरविवर्जितजंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर
नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो ॥ चित्त
चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ स
हस किरण सामी वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो
॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥
तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमु
ख संसा सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मा
न मेल मद ठेल करे, भगतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच
सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंध
व संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम
लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥
इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥

तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ ॥ वस्तु ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंततो ॥ बोधबीज स ज्ञायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिख्ख लेई सिख्खा स ही, गणहरपयसंपत्त ॥२२॥ भास ॥ आज हुउं सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय भरो ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तीहां केवल ऊपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसए ण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तपसोसियनिय अंग, अम्हां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे

दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउं ए अ
भिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो
वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कंचण मणि
निप्पन्न, दंम कलस ध्वज वड सहिय ॥ पेखवि पर
माणंद, जिणहर नरतेसर महिय ॥ निय निय काय
प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंव ॥ पणमवि
मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥
वयर सामीनो जीव, तिर्यकजृंनक देव तिहां ॥ प्रति
वोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन नणी ॥ वलता गो
यम सामि,सवि तापस प्रतिवोध करे ॥ लेई आपण सा
थ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांम
घृत आण,अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पा
त्र,करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुन नाव, उज्जल
नरियो खीर मिसे॥साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल
रूप हुआ ॥ २ए ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण
प्राकारत्रय॥पेखवि केवल नाण,उप्पन्नो उज्जोय करे॥
जाणे जणवि पीयूष,गाजंती घन मेघ जिम॥ जिनवा
णी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥
इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें,उपन्न परिव
रिय, हरि डरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जगगुरु

वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ,चरमजिनेसर इम जणे, गोयम म करिस खेव,छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव ॥.३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्लसिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठवतो ए कण य पजमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नयणाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो परमपए ॥ वलतो ए देव आकाश,पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादन्नेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि,आपकनासूं टालियो ए ॥ जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो सामि,जाण्यो केवल मागसे ए॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग,नेह न हेजें लालियो ए ॥ तिणसमें ए गोयम चित्त, राग वेरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें सा

ह्यियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उ माहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महि मा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, नविया न व जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढ म गणहर वरस पच्चास, गिहवासें संवसिय तीसवरससं जम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, वार वरस तिहु अण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वर साउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ॥३७॥ नास ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सोगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिर्यां लहके, जिम कणयाचल ते जें झलके, तिम गोयम सोनागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरुवर कणयव तंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रय णें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोय म गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम

उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जूमीपति जुयवल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलवधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज,सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ४२ ॥ पणवक्कर पहिलो पजणीजें, माया वीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवद्याय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें,कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पजणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५॥ धन माता जिण उयरें धरियो,धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लप्रइ पार, वड जिम

साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन बडो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए ॥ तिहां वेठी गुरु देशना देसी, नविक जीवनां काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रनाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ नूख्यां नोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा नंमार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंबित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम पमुहा,गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमतां, चवदेसे वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपन्नं ॥ वीरस्स पढम सीसं,गोयम सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वानीष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ इति श्री खरतरगछीय श्रावकस्य पंच प्रतिक्रमणादिसूत्राणि समाप्तानि ॥

॥ अथ स्वकुलप्रकाश लिख्यते ॥

॥ सुगुरु मेरे खरतर पति जिनराया ॥ जाके पाट परंपर दीपाया ॥ सु० ॥ ए टेक ॥ शासनपति महावीरके पाटें, सुधर्मास्वामी कहाया ॥ जंबूसें इग्यारमे पाटें, आर्य सुस्थित सुहाया ॥ सु० ॥ १ ॥ जिनुने कोटि सूरि मंत्र जप कर, कोटिक गच्छपद पाया ॥ वीरके सोलमे वज्रस्वामी, वज्र साखा कहाया ॥ सु० ॥ २ ॥ वज्रसेनके पाटें चंद्रसूरि, चंद्रकुल वरताया ॥ ऐसे पाट परंपर अडत्रिस, उद्योतन सूरि कहाया ॥ सु० ॥ ३ ॥ चैत्यवासि जिनचंद्र आचारिज, गोड वर्द्धमान आया ॥ उद्योतन के पाटें वर्द्धमान, गच्छ चोरासी कहाया ॥ सु० ॥ ४ ॥ वर्द्धमान सूरि धरणींद्र नेज कें, सूरिमंत्र शुद्ध कराया ॥ इनके पाटें जिनेश्वर सूरि, कुमती जन गज्जराया ॥ सु० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अरु ऐंशी वरषे, चैत्यवासीकुं हराया ॥ अन

र, जिनचंद्र नाम धराया ॥ श्रीहर्षसूरिके पाट सौभाग्य, सूरिराज कहाया ॥ सु० ॥ ७० ॥ हंससूरि जिन चंद्रसूरि एम, पाठ तिहोत्तर आया ॥ वीरसें लेकें वर्तमान तक, निज गुरु नाम बताया ॥ सु० ॥ ७१ ॥ श्रीजिनहर्षसूरीश्वरके निज, द्वितीय शिष्य कहाया ॥ हंसविलास शुभहित गणिके, लघु शिष्य कहाया ॥ सु०॥७२॥ वृहत् खरतरमें आज्ञाकारी, विक्रमपुर गुरु राया ॥ कल्यानानिधान पाठक पदशोभित, जिन आज्ञा मन लाया ॥ सु० ॥७३॥ पांख वेद अरु नंद चंदमें, १९४५ माहमास सुहाया ॥ वसंत पंचमी मंगल वारें, सहु नर मन उलसाया ॥ ॥सु०॥७४॥ कुंकन देशें सागर किनारें, पुर मुंबाई सुहाया ॥ श्रीचिंतामणि पार्श्वप्रसादें, शुभ गुरु का गुण गाया ॥सु० ॥७५॥ प्रह ऊठी गुरु नाम जे समरे, तन मन वेन लगाया ॥ गोपालचंद कहे गुरु मेरे, आनंद होत सवाया ॥सु०॥७६॥इति॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १०दस सूतक॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२बार सूतक॥ उंर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक ॥ पुत्र होते मरण पामे, तो दिन १ एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १एक सूतक ॥ गाय, जेंस, घोडी, सांढ, घरमांहे वियाचे, तो दिन १ एक सूतक॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेष्टायें रहते पुत्र पोत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन सूतक ॥ उंर जितना महिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. उंर मृतकके सूतकमें घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ उंर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. उंर जो मृतकको छूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंम नियम होवे, तो समताजाव रख कें संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजीके हाथ लगावे नहिं. उंर जो मृतककों छुवा न हो तो मात्र आव प्रहर पडिक्कमण न करे॥

भैंसके जब बच्चा होय,तब १५ पदर दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ ऋतुवती स्त्री, चार दिन भांभादिकको न छुवे. २ चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणें तिन दिवस उपरांत को इ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष न हिं ॥ शुरू विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पी छें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे,अग्रपूजा क रे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडिलाभे. ऋतु वंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु ऋतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा हे. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देवपूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत कवालेका घर दुर्गंछनिक कहा हे.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीछें, ऊंटके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें, गाडर, गधेडी, घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछें, नर नारीके मूत्रमें चार प्रहर पीछें, संमूर्छिम जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अथ असझायकी विगत कहते है ॥

१ धूंआरी पडे, तासीम असझाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती छाया तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर पडे तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असझाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जां लगें होय, तां सीम असझाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असझाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे, तो ५ पांच दिन उपरांत असझाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहूंती पडिवा लगें असझाय. तेर

स, चौदस, पूनम सीम सभी सांजे. अचित्त रजउड्डा वणहं काउस्सग्ग करुं? इछं. अचित्त रजउड्डाव णहं करेमि काउस्सग्गं. पठी लोगस्स उद्योयगरेना चार काउस्सग्ग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने ३प्रहरथी आरंभीने पडिवा लगें असद्याय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असद्याय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असद्याय.

११ अकालें वीज उल्कापात होय तो प्रहर १ अ०

१२ अजवालीये पक्षें सभी सांज, पडवो, बीज, त्रीज, इयांरी असद्याय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक अस०

१४ नूमिकंपें प्रहर ८ आठ असद्याय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार, उत्कृष्टें. अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असद्याय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असद्याय.

१७ आसाढ चउमासा पडिक्कमण ठयाहूंती प्रहर १२ बार असद्याय.

१७ कार्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीछें पडिवा लगें प्रहर चार असद्याय.

१ए मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल अ०

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असद्याय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असद्याय.

२२ फागण चउमासें रजपर्वी जां लगें रज उमे, अने उपशमे नहिं, तां लगें असद्याय.

२३ दंमको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असद्याय.

२४ परचक्रादि नय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र नणवुं न सूजे॥ अयं परमार्थः॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असद्याय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असद्याय.

२७ सो हाथमांहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो तां अणउछरे एटले ज्यां पर्यंत मृतककूं न उगवे, त्यां सीम असद्याय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पडवाथी हाथ १००सो मांहे अहोरात्र असद्धाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १००सोमांहे अहोरात्र असद्धाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने ऋतु आवे थके दिन ३ त्रण अस०

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असद्धाय न होय,

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असद्धाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असद्धाय.

३४ कालग्रहण विणकी जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ वार असद्धाय,

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदैव असद्धाय अने सूत्रनी असद्धाय तो प्रहर १२ वार सूधी जाणवी.

॥ अथ ॥

साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ओर दिन पीछें न खावणी सो लिखते हे.

॥ चावल प्रहर८, राव प्रहर१२, घीस प्रहर१०,

गाठी प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजी वडां प्रहर २४, घोलवडां प्रहर ४, तल्यां वडां प्रहर ४,पूडी प्रहर ०, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा ऊ ण्ण प्रहर १२, जवार उण्ण प्रहर १२, बाजरीकी खीचडी प्रहर ०, जवारकी खीचडी प्रहर ०, चा वलकी खीचडी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ०, वरसाले आटो दिन ५, पक्वान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्वान्न दिन १५, वरसाले पक्वान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू दिन ०, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ०, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी नीजोइ प्रहर ०, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १०, घीतेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वडी प्र हर ०, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ०, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व व स्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहिं ॥